श्री सीताराम... नमः

श्री सहस्त्रनाम की महिमा

श्री सीतासहस्त्र ना... ◘ श्रीराम सहस्त्रनामं

श्री युगल सहस्त्रनाम

सन्त शिरोमणि श्री गुरुदेव जी

... श्री शत्रुहन शरण जी महाराज, अयोध्या

❁ श्रीरामोजयति ❁

❁ श्रीमते आनन्दभाष्यकाराय श्रीरामान्दाचार्याय नमः ❁

❁ अथ भुशुण्डि रामायणान्तर्गत ❁

श्रीसीताराम युगल सहस्रनाम

❁ प्रारम्भ ❁

एकदा नारदो योगी परानुग्रहबांच्छया ।
पर्यटन् सकलान् लोकान् सत्यलोकमुपागमत् ।। १ ।।
ददर्श तत्र ब्रह्माणं ध्यानानन्दैकमानसम् ।
कृतांजलिपुटो भूत्वा पप्रच्छ विनयान्वितः ।। २ ।।
कस्यानन्देन संजातः स्मेरास्यस्त्वें मुहुर्मुहुः ।
कथयस्वाद्य मां प्रीतः परमानन्द कारणम् ।। ३ ।।

टीका—एक समय परम योगी श्रीनारद जी दूसरों के प्रति अनुग्रह की इच्छा से समस्त लोकों में भ्रमण करते हुए सत्य (ब्रह्म) लोक में आये। वहां ध्यान में रत, अद्वितीय, आनन्द मग्नचित्त वाले श्रीब्रह्मा जी को देखा। श्रीनारदजी ने हाथ जोड़कर विनम्रभाव से ब्रह्माजी से पूछा कि आप किस आनन्द से बारम्बार रोमांचित और पुलकित हो रहे हैं ! आज मुझ पर भी प्रसन्न हो अपने इस परम आनन्दित होने का कारण बताइये।

मू0—श्री ब्रह्मोवाच।

शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि परमानन्द कारणम्।
वशिष्ठो मत्सुतश्चात्र कथित्वा साम्प्रतं गतः।।४।।
श्रीसीतारामयोर्दिव्यं माधुर्यं च विशेषतः।
सहस्र नाम युगलं यदुक्तं परिणयोत्सवे।।५।।
सतानन्दवशिष्ठौ च, शाखोच्चारेषु चक्रतुः।
तन्मां वै कथितं चाद्य, वशिष्ठेन माहत्मना।।६।।
स्मृत्वानन्द विमग्नोऽहं, परमानन्द कारणम्।

टीका—ब्रह्मा जी बोले, "हे वत्स, सुनो। मैं तुमसे अपने परमानन्द का कारण कहता हूं। मेरे पुत्र, वशिष्ठ जी अभी कह कर गये हैं कि श्री सीताराम जी का युगल सहस्र नाम परमदिव्य है और विशेषकर माधुर्य रस से ओतप्रोत है। यह युगल सहस्रनाम श्रीयुगल सरकार के विवाहोत्सव में गाया गया था और इसे श्री सतानन्द और वशिष्ठ जी ने शाखोच्चार में कहा है। उन्हीं युगल सहस्र नामों को वशिष्ठ जी ने आज मुझे सुनाया है। यही मेरे परमानन्द का कारण है और मैं उन्हीं श्रीयुगल सहस्र नामों का स्मरण कर इस समय आनन्द मग्न हो रहा हूं।

पितुर्बचनमाकर्ण्य नारदो विनयान्वितः।।७।।
पप्रच्छपितरं सम्यक् सीताराघवयोः शुभम्।
यदि त्वं मयिप्रसन्नोऽसिकथयस्वेतिमामिदम्।।८।।

को विधिः क ऋषिर्देबः किंमन्त्रं बीजशक्तिकम् ।
अंगन्यासं करन्यासं पठतः किं फलं भवेत्।। ९।।
सम्यक् सहस्रकं नाम युगलं रामसीतयोः ।
कृत्स्नं कथय मामद्य स्नेहोमयि यदिजायते।। १०।।

टीका—देवर्षि श्रीनारद ने अपने पिता, श्रीब्रह्मा जी के बचन को सुन अत्यन्त विनम्र हो इस परम पवित्र श्री सीताराम जी के युगल सहस्र नामों को पूछा। वे बोले "हे पिता जी ! आप यदि मुझपर प्रसन्न हैं तो इस युगल सहस्र नाम को कहिये और यह भी बताइये कि इसकी विधि क्या है, ऋषि कौन हैं ! देवता कौन हैं ! मंत्र क्या है। शक्ति कौन है ! अंग न्यास और करन्यास कैसे किया जाता है तथा इसके पाठ से क्या फल होता है। "यदि आप का मुझपर स्नेह है तो मुझे, श्री सीताराम जी के सम्पूर्ण युग सहस्र नामों को अच्छी प्रकार से बताइये।

नारदस्य वचः श्रुत्वा ब्रह्मप्रोवाच तं मुदा ।
शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि नामयुगल सहस्रकम्।। ११।।
यत्तु श्रुत्वा पठित्वा वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।

टीका—नारद के ऐसे वचन को सुन, ब्रह्मा जी अत्यन्त प्रसन्न हो कहने लगे, हे वत्स ! सुनो, मैं तुम से श्री सीताराम जी के युगल सहस्र नामों को कहता हूं। इसके सुनने अथवा पढ़ने से (पाठ करने से) मनुष्य त्रैलोक्य विजयी हो जाता है।

मू०—ऊं अस्य सीताराम सहस्र नाम युगल माधुर्य

स्तोत्रमत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्री रामचन्द्र परमात्मा देवता श्री जानकी शक्तिः श्री जानकी रामचन्द्र प्रीत्यर्थे विनियोगः।। अथ मंत्र बीजम्।। ॐ ह्री ह्री श्रीं जानकी रामचन्द्राभ्यां नमः।। अथ करन्यासः।। ॐ ह्री अंड.गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्री तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ जां अनामिकाभ्यां नमः। ॐ नं कनिष्ठाकाभ्यां नमः। ॐ कीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ रां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं शिरसेस्वाहा। ॐ मां शिखायै वषट्। ॐ श्रीं रामाय कवचायहुं। ॐ ह्री नेत्राभ्यां बौषट्। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं क्लीं अस्त्राय फट्।

(नोट :—इस प्रकार उपर्युक्त विनियोग और करन्यास आदि करके ध्यान करें।)

मू०—अथध्यानम्—ध्यायेत् स्वर्णाभकान्ति सरसिजनयनां पूर्णचन्द्रस्मितास्यां सीतां रामस्य वामामरुषितवदनं वारिदाकारदेहम्। विद्युत्पुंजाभवस्त्रंबहुमणिखचितं भूषणान् कांचनानां विभ्रन्तं ह्यन्बुजाक्षं धृतशिरसि शुभं मंजुलं रत्नमौरम्।। १।।

टीका—स्वर्ण के समान कान्ति वाली कमल के समान आंखों वाली, पूर्णचन्द्रमा के सदृश प्रसन्नमुखी श्रीरामजी की प्राणप्रिया श्री मैथिली जू तथा

प्रसन्न मुख, मेघ के सदृश श्याम शरीर वाले, बिजली के समूहों के सदृश बहुत सी मणियों से जटित पीत वस्त्र धारी, स्वर्णभूषणयुक्त और मनोहर रत्न जटित परम शुभ मौर को शिर पर धारण किये, कमलनयन श्री राम जी का ध्यान करना चाहिये।

❁ अथ सहस्र नाम प्रारभ्यते ❁

सीरध्वजात्मजा सीता जानकी यज्ञभूमिजा ।
रघुराट् रामचन्द्रश्च श्रीमान दशरथात्मजः ।। १ ।।
भूमि पुत्री भूमिजाता भूसुता भूतलात्मजा ।
राघवो रघुनाथश्च रघुराजो रघूतमः ।। २ ।।

टीका—सीरध्वजात्मजा—'सीर का अर्थ है सूर्य अथवा हल'। जिसकी ध्वजा में वह (सूर्य अथवा हल) हो उसे सीरध्वज कहते हैं, उनकी आत्मजा अर्थात् पुत्री। सीता— अपनी निर्हेतुक वात्सल्यादि दिव्य गुणों से बांधने वाली। श्री जानकी श्री जनक महाराज की माधुर्यरसमयी उपासना से वशीभूत होकर प्रकट होने वाली। यज्ञभूमिजा—यज्ञभूमि से पैदा होने वाली। (यज्ञ करने के लिए जिस समय महाराज श्री सीरध्वज जी सुवर्ण के हल से पृथ्वी संशोधन कर रहे थे उसी समय आप उस यज्ञीय (यज्ञ करने योग्य) भूमि से प्रकट हुई, अतः यज्ञ भूमिजा नाम है) रघुराट्-रघुकुल में अवतीर्ण होकर विशेष करके सुशोभित होते हैं अतएव श्री राम जी का रघुराट् नाम है। श्री रामतापनी में लिखा है—'रघौ कुलेऽखिलं राति राजते यो महीस्थितः'—अर्थात रघुकुल में जो अवतीर्ण होकर सम्पूर्ण चराचर को देता

है और पृथ्वी पर स्थित होकर सुशोभित होताहै।) रामचन्द्रः—चन्द्रमा के सदृश सब के अभिरामक होने से रामचन्द्र नाम है। [जिस प्रकार दिन में सूर्य के ताप से तपे हुऐ जीवों को रात में चन्द्रमा अपनी शीतल किरणों से शीतलता प्रदान करता है, उसी प्रकार संसार के तापों से तपें हुए जीवों को श्री राम जी अपनी कृपा कटाक्षों से शीतलता अर्थात् सुख प्रदान करते हैं।] श्रीमान—'श्री' शब्द श्री सीताजी का द्योतक है, क्योंकि यहां श्री रामजी के नामों का ही संकलन है और श्रीराम के साथ श्रीसीताजी का ही सम्बन्ध है। (श्रीमदरामायण में "श्रियः श्रींभर्तृवत्सलाम्" श्री की भी श्री हैं और भर्तृवत्सला हैं—ऐसा श्रीसीता जी का वर्णन आता है। तात्पर्य यह है कि 'श्री' शब्द श्रीसीताजी का ही द्योतक है।) श्रीमान् अर्थात् श्री (सीता) से जो नित्ययुक्त हैं अर्थात् श्रीराम। "अनन्या राघवेणाहं भास्करेण प्रभा यथा" आदि बाल्मीकीय रामायण के प्रमाणों से भी श्री सीता जी से श्री रामजी नित्ययुक्त रहते हैं। यहां पर नित्ययोग में ही श्री शब्द से मतु प् प्रत्यय हुआ है। यदि कोई यह शंका करे कि आप दोनों (श्री सीता तथा श्री राम) का नित्य योग तो नहीं रहा, बीच बीच में विश्लेष भी होता रहा तो यह कहना भूल है। आप दोनों का कभी विश्लेषण नहीं हुआ, क्योंकि श्री सीताजी का वा० रा० सु० का स्वतः वचन है 'नापहर्तुमहं शक्या' अर्थात् श्रीरामजी से मुझे कोई अपहरण (अलग) नहीं कर सकता। दशरथात्मजः—महाराज दशरथ के पुत्र। (जिसका रथ दशों दिशाओं में जाता है, उसको 'दशरथ' कहते हैं। चक्रवर्ती श्रीअयोध्यापति का रथ पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर ईशान्य, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, नीचे के अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, पाताल आदि सप्त लोकों तथा जनलोक आदि सब जगहों में जाने वाला था अतएव आप का नाम 'दशरथ' था। उन्हीं के माधुर्य उपासना से प्रसन्न हो कर 'परात्पर प्रभु श्रीरामजी' अवतीर्ण हुए अतः दशरथात्मज आप का नाम है।

भूमिपुत्री भूमि से प्रकट होने के कारण भूमी की पुत्री। भूमिजाता, भूसुता, और भूतलात्मजा—भूमि, भू तथा भूतल इन तीनों का एक ही अर्थ है—पृथ्वीजाता, सुता और आत्मजा का भी एक ही अर्थ है—कन्या अर्थात् 'पृथ्वी की कन्या'। पृथ्वी से उत्पन्न होने के कारण ही ये तीनों नाम हैं। रघुनाथः—रघुकुल के स्वामी रघुराजः—रघुकुल के राजा रघूत्तम, रघुकुल में सब से उत्तम अर्थात् श्रेष्ठ।

मू०—मैथिली मिथिलापुत्री मैथिलेश्वरनन्दिनी ।
कौशल्येश्च काकुत्स्थः कौशल्येयानन्दवर्द्धनः ।। ३ ।।
धरात्मजा धरावाला धरानन्दविवर्द्धिनी ।
रघुवंशो राघवेन्द्रो राघवाननन्ददायकः ।। ४ ।।
विदेहात्मजा च वैदेही विदेहानन्दवर्द्धिनी ।
विश्वामित्रानुगामी च ताटकारिः पिनाकहा ।। ५ ।।

टीका—मैथली—मिथिलेश महाराज की कन्या होने से मैथिली और मिथिला पुत्री, ये दो नाम हैं। यद्यपि मिथिला उस देश का नाम है जिस के महाराज सीरध्वज जी राजा थे पर तत्स्थ होने से महाराज को भी मिथिला कह दिया जाता है। 'मंचाः क्रोशन्ति' वाक्य में जैसे मंचशब्द का अर्थ मंचस्थ पुरुष में होता है वैसे ही यहां पर मिथिला शब्द का अर्थ मिथिलेश होगा। मैथिलेश्वर नन्दिनी—मिथिलेश महाराज को अपनी बालक्रीड़ाओं से आनन्द देने वाली। कौशल्येयः श्रीकौशल्या माता की वात्सल्योपासना से प्रसन्न होकर अज, निर्विकार परात्पर पुरुष श्रीराम जी श्री कौशल्या जी के पुत्रभाव को प्राप्त हुए। अतः कौशल्येय हैं। काकुत्स्थः—"ककुद बैल की टीलहा को

कहते हैं। उस पर जो स्थित हो उसको "ककुत्स्थ" कहते हैं। भगीरथ महाराज के पुत्र का नाम ककुत्स्य है। इसकी आख्यायिका इस प्रकार है:—एक समय देवता और दैत्यों में संग्राम हुआ। देवता जब हारने लगे तो महाराज श्री भगीरथ नन्दन जी से सहायता की प्रार्थना की। महाराज ने कहा कि यदि इन्द्र बैल बनकर मेरी सवारी में रहें तो मैं दैत्यों को परास्त कर सकता हूँ। देवराज ने इसे स्वीकार किया। महाराज उस बैल पर सवार हो कर गये और दैत्यों को परास्त किया। तभी से आप का नाम काकुत्स्थ हो गया। श्रीरामचन्द्र जी उसी कुल में अवतीर्ण हुए, अतः आप का नाम भी काकुत्स्थ है। कौशल्यानन्दवर्द्धनः कौशल्या जी के पुत्र भाव को प्राप्त होकर उन के आनन्द को बढ़ाने वाले। धरात्मजा, धरावाला तथा धरा नन्दमिर्द्धनी-धरा का अर्थ पृथ्वी है। आत्मजा और बाला का अर्थ कन्या है। पृथ्वी की कन्या होने से धरात्मजा तथा धरावाला नाम है पृथ्वी से पृथ्वी पर अवतीर्ण हो अपनी क्रीड़ाओं से पृथ्वी (अपनी माता) के आनन्द को बढ़ाने के कारण 'धरानन्दवर्द्धिनी,' नाम हुआ। रघुवंशः—श्रीराम जी के रघु वंश में प्रकट होने से पूर्ण स्थिति वाला हुआ। अतः आपका यह नाम है राघवेन्द्र—रघुवंशियों में इन्द्र अर्थात् परम ऐश्वर्य वाले। राघवानन्ददायकः—राघव जो श्रीदशरथ जी, उनको आनन्द देने वाले। विदेहात्मजा—विदेह जी भी निमी जी महाराज का नाम है। उनके वंश में जो उत्पन्न हुए उन सभी की 'विदेह' उपाधि हो गई। अतः विदेह नाम श्री सीरध्वज जी का है। उनकी आत्मजा (कन्या) होने से विदेहात्मजा नाम हुआ। विदेह महाराज की अपत्य (पुत्री) भाव को प्राप्त होने से वैदेही, तथा विदेह जी को अपनी बालक्रीड़ाओं से आनन्द प्रदान करने से विदेहानन्दवर्द्धिनी नाम है विश्वामित्रानुगामी—विश्वामित्र जी के यज्ञ की रक्षा हेतु उनके पीछे पीछे चले अतः विश्वामित्रानुगामी नाम है।

ताटकारिः—ताटका अरिः। ताटका एक राक्षसी का नाम है जो मारीच राक्षस की माता थी, उस के आप अरि अर्थात् मारने वाले हैं। अतः ताटिकारिनाम है। पिनाकहा—'पिनाक' श्री शिवजी के धनुष का नाम है। उसको आपने हनन किया अर्थात् तोड़ा। अतः पिनाकहा नाम है।

मू०—मिथिलापुण्यकर्त्री च मिथिलानन्दपूरणी ।
विश्वमित्रमखत्राता सुबाहुप्राणहारकः ।। ६ ।।
मिथिलेशकिशोरी च मिथिलेशकुमारिका ।
काकुत्स्थवंशप्रभवः काकुत्स्थकुलदीपकः ।। ७ ।।
धरणीगर्भसम्भूता धराकन्या धरासुता ।
अयोध्याधिपतिर्वीरः सरयूतटक्रीडनः ।। ८ ।।

टीका—मिथिलापुण्यकर्त्री—मिथिला को अपनी जन्मभूमि का यश प्रदान कर उसे पुण्यमयी बनानेवाली। मिथिलानन्द पूरणी—मिथिला की जनता को अपनी वात्सल्य क्रीड़ाओं से पूर्ण आनन्द प्रदान करने वाली। विश्वामित्र मखत्राता, सुबाहु प्राणहारकः—विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करने से विश्वमित्रमखत्राता नाम है तथा सुबाहु नामक राक्षक के प्राणों को हरने वाले होने से सुबाहु प्राणहारक नाम है। मिथिलेशकिशोरी मिथिलेशकुमारिका—श्रीमिथिलेश जी की पुत्री होने से मिथिलेशकिशोरी तथा मिथिलेशकुमारिका ये दोनों नाम हैं। काकुत्स्थवंशप्रभवः तथा काकुत्स्थ कुलदीपकः—काकुत्स्थवंश (व्याख्या ऊपर देखें) में अवतीर्ण तथा उस वंश (कुल) के दीपक (प्रकाशित करने वाले) होने से ये दोनों नाम हैं। धरणीगर्भसम्भूता—धरणी का अर्थ पृथ्वी है और 'सम्भूत' प्रकट होने को

कहते हैं। पृथ्वी के गर्भ से प्रकट होने से धरणी गर्भ सम्भूता नाम है। धरा (पृथ्वी) की कन्या होने से धराकन्या और धरासुता नाम है। अयोध्याधिपति—श्री अयोध्यापुरी के अधिपति (स्वामी) होने से अयोध्याधिपति नाम है। वीरः अपने भक्तों की शारीरिक तथा मानसिक शत्रुओं से रक्षा करने के कारण 'वीरः' नाम पड़ा। सरयूतटक्रीडमः—श्री सरयू के किनारे बालक्रीड़ा आदि करने के कारण 'सरयूतटक्रीडनः' नाम है।

मू०—विदेहवंशप्रभवा विदेहकुलभूषणा ।
दिनेशवंशप्रभवो रघुवंशविभूषणः ।। ९ ।।
रसात्मजा रसापुत्री सुनेत्रीक्रीडखेलिनी ।
अयोध्यापालकोवन्द्यः सुमित्रापुत्रसेबितः ।। १० ।।
गिरिजापूजनरता सरोजवनक्रीडिनी ।
कोदण्डखण्डकर्त्ताच भूपगर्वविनाशकः ।। ११ ।।
रामवामांकशोभाढ्या रामभार्या विलासिनी ।
भार्गवतेजोहृच्छान्तः विदेहाधिपपूजितः ।। १२ ।।

टीका—विदेहवंशप्रभवा—विदेह वंश में उत्पन्न होने वाली। विदेहकुलभूषणा—विदेह कुल की भूषणा (अलंकार) (ये दोनों नाम विदेह वंश में उत्पन्न होने से हुए।) दिनेश वंशप्रभवः—दिनेश (सूर्य) वंश में प्रभव (प्रकट्) होने वाले। रघुवंशविभूषणः—रघुवंश के भूषण (अलंकार)। रसात्मजा, रसापुत्री—'रसा' का अर्थ पृथ्वी है तथा 'आत्मजा' तथा 'पुत्री' का अर्थ एक ही है। पृथ्वी की पुत्री होने से 'रसात्मजा' तथा 'रसापुत्री' ये दोनों नाम हैं। सुनेत्रीक्रीडखेलिनी—श्री सुनयना जी की गोद में खेलने वाली होने से

यह नाम है। अयोध्यापालक:—श्री अयोध्या जी का पालन करने वाले। वन्द्य:—जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि सभी देवगण, मुनिगण, तथा समस्त चराचर के वन्द्य हैं अर्थात् जिनकी सभी वन्दना करते हों। तात्पर्य यह कि आप समस्त चराचर, देवी, देवताओं से वन्द्य हैं। अत: आप का यह नाम है। सुमित्रासुतसेवित:—सुमित्रापुत्र श्री लक्ष्मण जी द्वारा सेवित होने से यह नाम है। गिरिजापूजनरता, सरोजवनक्रीडनी—गिरिजा अर्थात् पार्वती जी की उपासिका होने से गिरिजापूजनरता तथा कमलवन में क्रीड़ा करने से सरोजवनक्रीडनीनाम हैं। कोदण्डखण्डकर्त्ता तथा भूपवर्गविनाशक:—श्री मिथिलेश के धनुष यज्ञ में कोदण्ड (पिनाक) को तोड़कर उस धनुष यज्ञ में आये हुए सभी राजाओं के घमण्ड को चूर करने के कारण ये दोनों नाम हैं। रामवामांग्शोभाढ्या, रामभार्या विलासिनी—श्रीराम चन्द्र जी की वामांगिनी (स्त्री) हो कर उनके अंक (गोदी) के परम सौंदर्य को बढ़ाने के कारण 'रामावामांगशोभाढ्या' नाम है तथा उनकी धर्मपत्नी होने से और उन्हें अपनी विलास क्रीड़ा से परम सुख प्रदान करने के कारण 'रामभार्या' और 'विलासिनी' नाम हैं। 'भार्गवसेत्रोहत्'—भार्गव नाम परशुराम जी का है। धनुषयज्ञ में पिनाक को तोड़ने के बाद क्रोधी परशुराम के तेज को नाश करने से यह नाम है। शान्त:—आपकी कान्ति परम शान्त है, अतएव यह आप का नाम है। 'विदेहाधिपपूजित: श्रीमिथिलेश ने अपनी कन्या वैदेही का कन्यादान दे आपकी पूजा की अत: आप 'विदेहाधिपपूजित' हुये।

मू०—मुनिमंगलदात्री च मुनिराजकुमारिका ।
कैकेयीपुत्रवशग: श्रीमद्दशरथात्मज: ।। १३ ।।
विदेह-राजदुहिता कामेश्वरशिवार्चिनी ।
मिथिलादर्शनालोभी मैथिलेशांघ्रिवन्दित: ।। १४ ।।

कौशल्यापुत्रपत्नी च कौशल्यापुत्रशोभिता ।
कौशल्यागर्भसम्भूतः कौशल्यास्तनपानकृत् ।। १५ ।।

टीका—'मुनिमंगलदात्री'—मुनियों को मंगल देनेवाली 'मुनिराजकुमारिका'—मुनियों के राजाश्री कुशध्वज जी की कुमारी। 'कैकेयीपुत्रवशग' कैकेयीपुत्र श्री भरतजी के प्रेम के वशीभूत होने से कैकेयी पुत्रवशगः तथा श्री दशरथ जी के पुत्र होने से 'श्रीमद्दशरथात्मज' नाम है। 'विदेहराजदुहिता'—श्री जनक जी महाराज की कन्या। 'कामेश्वरशिवार्चनी'—श्री कामेश्वर महादेव तथा श्री शिवा (श्री पार्वतीजी) की अर्चना अर्थात् पूजा करने वाली। 'मिथिलादर्शनालोभी' तथा मैथिलेशांघ्रिवन्दितः—मिथिला के दर्शन के लोभी होने से 'मिथिलादर्शनालोभी' तथा श्री मैथिलेश द्वारा श्री रामचन्द्र जी के चरण—कमलों की वन्दना की गई, अतः 'मैथिलेशांघ्रिवन्दितः' नाम हुआ। कौशल्यापुत्रपत्नी—कौशल्या के पुत्र श्री रामचन्द्र जी की स्त्री होने से यह नाम है। कौशल्यापुत्रशोभिता श्री कौशल्याजी के पुत्र श्रीरामजी से शोभित होने की वजह से अथवा श्री रामजी को आप शोभित करने वाली हैं। अतः आपका 'कौशल्यापुत्र शोभिता' यह नाम है। 'कौशल्या गर्भ सम्भूतः'। तथा 'कौशल्यास्तनपानकृत्'। श्री कौशल्या माता के गर्भ से उत्पन्न होने से 'कौशल्यागर्भ सम्भूतः' तथा श्रीमाता जी के स्तन से दूध पीने से 'कौशल्यास्तनपानकृत्' नाम है।

मू०—श्रीदशरथस्नुषा दिव्या दशरथसुतबल्लभा ।
मैथिलेश्वरजामाता अजनन्दननन्दनः ।। १६ ।।
सोमवंशसमुद्भूता सूर्यबंशविवाहिता ।
कौशलेशकुमारश्च कोशलापालनक्षमः ।। १७ ।।

लांगलाग्रप्रकटिता पंचवर्षशरीरिणी ।
हव्यपिण्डसमुद्भूतो मुनीशबहु प्रार्थितः ।। १८ ।।
ऊर्मिलासह यानस्था कौतुकागारशोभिता ।
श्रीसीताबामभागी च लक्ष्मणनुचरप्रियः ।। १९ ।।
इच्छावती तोयतृप्ता ऊर्बिजाकुण्डपुण्यदा ।
सरयूजलतृप्तात्मा सरयूपुण्यक्षेत्रकृत् ।। २० ।।

टीका—श्रीदशरथ जी की स्नुषा अर्थात् पुत्रवधू होने से 'दशरथस्नुषा' नाम है। 'दिव्या'—देवलोकीय क्रीड़ाओं को इस मर्त्यलोक में करके अपने चराचर पुत्रों को मातृ स्नेह से अपनाया, अतः 'दिव्या' नाम है। दशरथसुतबल्लभा—श्रीदशरथसुत श्री रामचन्द्र जी की प्राणप्रिया। 'मैथिलेश्वरजामाता'—श्रीमिथिलेशजी के दामाद। 'अज-नन्दननन्दन'—अज महाराज के पुत्र श्री दशरथ जी महाराज के नन्दन श्री राम जी। 'सोमवंससमुद्भूता'—सोमवंश में उत्पन्न + होने से यह नाम है। 'सूर्यवंशविवाहिता'—सूर्यवंशी श्री रामचन्द्र जी के साथ ब्याही गई अतः यह नाम है। 'कौशलेश कुमार'—कौशलेश श्री दशरथ जी के पुत्र। 'कौशलापालनक्षम्ः'—कौशल देश (अयोध्या आदि) के प्रजाओं के पालन की उचित क्षमता रखने वाले । यों तो श्री अयोध्या आदि का पालन सभी सूर्यवंशी राजाओं ने किया पर उसका समुचित पालन श्री रामचन्द्र जी ने ही किया। कारण, सभी सूर्यवंशी राजा अपने मृत्यु काल तक ही अयोध्या की प्रजा का पालन कर, उन्हें यहीं छोड़ अपने गन्तव्य स्थान को चले गये परन्तु

+ टीका सोमवंश में उत्पन्न होने का आख्यान चिन्त्य है।

श्री रामचन्द्र जी ने ग्यारह हजार वर्षों तक अयोध्या की प्रजा का पालन किया और जब अपने नित्य धाम को पधारने लगे तो सम्पूर्ण कौशल देश को भी अपने साथ अपने धाम को ले गये। 'लांगलाग्रमकटिता'—'लांगलाग्र' हल के अगले भाग को, जो पृथ्वी को कुरेदता है, कहते हैं। श्री जानकी माता उसी 'लांगलाग्र' के नीचे की पृथ्वी में प्रकट हुई थीं। इसीलिए आपका यह नाम है। 'पंचवर्षशरीरिणी'—श्रीकिशोरी जी सदैव पंचवर्षीयबालिका के समान ही बनीं रहती हैं, अतः यह नाम है। इसमें किसी प्रकार की शंका नहीं हो सकती क्योंकि ऐसे कई प्रमाण हैं—जैसे सनकादिक महर्षियों का शरीर कई युग बीतने पर भी पांच वर्ष का ही बना रहता है। तथा देवताओं की भी अवस्था सदैव पचीस वर्ष की ही बनी रहती है। 'हव्यपिण्डसमुद्भूतः' प्राजापत्य पुरुष के द्वारा लाये गये चरु (हव्य) के पिण्ड से समुद्भूत अर्थात् प्रकट। 'परात्पुरुष श्री रामचन्द्र जी' मुझे पुत्र भाव से प्राप्त हों, इस कामना से चक्रवर्ती श्री दशरथ जी महाराज ने अपने गुरु वशिष्ठ जी महाराज के आज्ञानुसार पुत्रेष्टि रूप अर्थववेदोक्त यज्ञ मन्त्रों से उपासना की। उक्त उपासना के अव्यवहितोत्तर काल में ही विश्वासोत्पादन् के लिए अर्थात् आप की की हुई उपासना पूर्ण है मैं आप के यहाँ पुत्र-भाव से अवश्य प्राप्त होऊंगा) श्री भगवान ने हव्य (पायस) भेजा उसको श्री दशरथ जी ने यथा योग्य विभाग कर अपनी प्रधान रानियों को बांट दिया। उक्त हव्य के पान के बारह मास बाद श्री कौशल्या माता ने श्रीराम चन्द्र जी को प्रकट किया। मुनीशबहुप्रार्थितः मुनीश्वरों ने जिनकी बहुत प्रकार से प्रार्थना की जब श्रीरामचन्द्र जी दण्डकारण्य में गये थे उस समय महर्षियों ने आपसे प्रार्थना की थी यथा ते वयं भवता रक्ष्या भवद्विषयवासिनः। नगस्थोवनस्थोवा त्वं नोरामा जनेश्वरः।। न्यस्तदण्डावयं राजन् जितक्रोधा जितेद्रियाः। रक्षितव्यास्त्वया शश्वद्गर्भभूतास्तपोधनाः···रक्षणीयास्त्वया राजन् भक्ष्यमाणा

निशाचरैः। आदि अनन्य प्रकार से प्रार्थित् हुए। अतः आपका यह नाम है। 'ऊर्मिलासहयानस्था'—अपनी छोटी बहन ऊर्मिला जी के साथ शिविका में स्थित। 'कौतुकागारशोभिता'—कौतुक का अर्थ है उत्सव, मंगल, विवाह सूत्र आदि तथा आगार, भवन को कहते हैं। आप (माता जानकीजी) उत्सवभवन, मंगलभवन, विवाहमण्डप, कोहवर आदि में सुशोभित हुईं, अतः 'कौतुकागारशोभिता' नाम है। श्री सीता वामभागी—(यज्ञ, दान, पूजा आदि समय में भार्या अपने पति के दक्षिण भाग में बैठती है अतः पति अपनी पत्नी के वामभाग में हो जाता है।) श्री रामजी अनवरत यज्ञ, दान, दीक्षा आदि में रत रहते और प्रथानुसार श्री सीता जी सदैव आप के दक्षिण भाग में बैठती थीं और इस प्रकार श्रीराम जी, श्री सीता जी के वाम भाग में हो जाते हैं। अतः आप का नाम 'सीतावामभागी' है। अथवा सीताजी हैं वामभाग में जिसके उसको सीतावामभागी कहते हैं 'लक्ष्मणामुचरप्रियः'—श्री लक्ष्मण जी सदैव आपके अनुचर थे और आप के अत्यन्त प्रिय थे अतएव 'लक्ष्मणानुचरप्रियः' कहलाते हैं। 'इच्छावती तोय तृप्ता'—इच्छावती नामक नदी के जल से तृप्त (संतुष्ट) होने के कारण श्री किशोरी जी का यह नाम है। 'ऊर्विजाकुण्डमुण्यदा'—'ऊर्विजाकुण्ड' को पुण्यमयी बना देने वाली। 'सरयूजल तृप्तात्मा'—श्री सरयू जी के जल से नित्य तृप्त रहने वाले। 'सरयूपुण्यक्षेत्रकृत्'—श्री सरयू तट पर श्री अयोध्या में जन्म ग्रहण कर श्री सरयू जी को पुण्यमयी बनाने के कारण आपका 'सरयूपुण्यक्षेत्रकृत्' नाम है।

मू०—सरयूस्नानरसिका मन्दारवनकेलिनी ।
अहल्यापावनश्चैव कांचनारण्यवासकृत्।। २१ ।।
कौशल्याशुश्रूषयन्ती राममातृसुलालिता ।
धनुर्बाणधरश्चैव सन्तानवनकेलिकृत्।। २२ ।।

अवनीनन्दिनी रामा रामानन्दप्रदायिनी ।
सीतामुखारविन्दालि सीताप्रीतिपरायणः ।। २३ ।।
कौशल्यावीजयन्ती च कौशल्यागृह लम्पिनी ।
कौशल्यादत्तकवलः कौशल्यादत्तभूषणः ।। २४ ।।
कौशल्यांघ्रिनमस्कर्त्री कौशल्याशिवलाभिनी ।
सीतानम्रप्रियश्चित्तः सीतामन्दास्मितासुखी ।। २५ ।।
दाड़िमीकुसुमोष्ठी च नीलरत्नाद्विजावली ।
राजाधिराजपुत्रश्च मृगयालोभतत्परः ।। २६ ।।

टीका—'सरयूस्नानरसिका'—श्री सरयू जी में स्नान करना प्रिय होने से श्री किशोरी जी का यह नाम है। 'मन्दारबनकेलिनी'—मन्दारबन में क्रीड़ा करने में तत्पर होने से श्री जानकी माता 'मन्दारबनकेलिनी' कहलाती हैं। 'अहल्यापावनः' तथा 'कांचनारण्यवासकृत'—श्री अहल्या जी को पवित्र करने से श्री राम जी को 'अहल्यापावन' कहते हैं और कंचनबन में वास करने से 'कांचनाराण्यवासकृत्' नाम है। 'कौशल्याशुश्रूषयन्ती'—श्रीकौशल्या माता के अनेकानेक दासदासी रहते भी श्री किशोरी जी, अपने दास दासियों को विलग कर सेवा स्वयं अपने हाथों किया करती थीं, अतः आप 'कौशल्याश्रूषयन्ती' हैं। 'राममातृसुलालिता'—श्री कौशल्या जी (श्री रामचन्द्र जी की माता) अपनी पुत्रवधू श्री जानकीजी को बहुत लाड़प्यार करती थीं अतः 'राममातृसुलालिता' कहलाती हैं। 'धनुर्वाण धरः' श्री रामचन्द्र जी निरन्तर अपने भक्तों के परित्राण के लिये धनुष बाण लिये तत्पर रहते हैं, अतः आप 'धनुर्वाणधर' हैं। 'सन्तानवनकेलिकृत्'—सन्तानवन में श्री

रामचन्द्र जी क्रीड़ा करने वाले हैं अतः 'सन्तानबनकेलिकृत्' नाम है। 'अवनीनन्दिनी'—अवनी (पृथ्वी) को आनन्द देने वाली। 'रामा'-श्रीराम में निरन्तर रत (लीन) रहने वाली 'रामानन्दप्रदायिनी'—श्री रामचन्द्र जी को आनन्द प्रदान करने वाली। 'सीतामुखारविन्दालि'—श्री किशोरी जी के मुखकमलभ्रमर। 'सीताप्रीतिपरायणः'—श्री किशोरी जी के प्रीति के परायण, श्री राम जी हैं 'कौशल्यावीजयन्ती' तथा 'कौशल्यागृहलम्पिनी'—श्री कौशल्या माता के ऊपर श्री किशोरी जी पंखा झलती हैं अतः 'कौशल्या वीजयन्ती' तथा श्री कौशल्या जी के घर का लेपन करने से 'कौशल्यागृहलम्पिनी' नाम है। कौशल्यादत्तकवल तथा कौशल्यादत्त भूषण श्री कौशल्या माता अपने प्रिय पुत्र श्री रामचन्द्र जी को अपने हाथों से भोजन कराती हैं तथा मणिमय आभूषणों से विभूषित करती हैं, अतएव उपर्युक्त दोनों नाम हैं। 'कौशल्यांघ्रिनमस्कर्त्री' तथा 'कौशल्याशिबलाभिनी'—श्री जानकी जी अपनी सास (श्री कौशल्या माता) की अंगि (चरणों) को छूकर नमस्कार करती हैं। तथा अपनी सास से कल्याणमय आशीर्वाद प्राप्त करती हैं, अतः आप के ये दोनों नाम हैं। 'सीतानम्रप्रियश्चितः' तथा 'सीतामन्दस्मितामुखी'—श्री राम चन्द्र जी को श्री किशोरी जी का नर्मसाचिव्यता प्रिय होने के कारण 'सीतानर्मप्रियश्चित्तः' तथा श्री सीता जी की मन्द मन्द मधुर मुस्कान से श्री रामचन्द्र जी परमसुखी होते हैं, अतः 'सीतामन्दस्मितमुखी' नाम है। 'दाड़िनीकुसुमोष्ठी'—अनार के पुष्प के समान ओष्ठवाली। 'नीलरत्नद्विनावली'—(दांतों में मिस्सो लगाने के कारण) नील वर्ण के मणियों (रत्नों) के समान दांतों (द्विज) की पंक्ति (अवली) वाली श्री किशोरी जी हैं। 'राजाधिराजपुत्रः'—राजाओं के अधिराज (पूज्य) श्री दशरथ जी के पुत्र श्री राम जी हैं अतः 'राजाधिराजपुत्रः' नाम है। 'मृगयालेभततत्परः'—शिकार खेलने के लिए बराबर तत्पर होने के कारण

यह नाम है। यद्यपि ('नात्पर्थमभिकांक्षामि मृगयां सरयू वने, रतिर्ह्येषातुला लोके राजर्षिगणसम्मता। अयोध्याकाण्डीय बाल्मीकीय रामायण के श्लोक के प्रमाण से यह स्पष्ट है कि आपको मृगया बहुत प्रिय नहीं है, तथापि आप मारीच आदि दुष्ट राक्षसों का नाश करने के लिए मृगया के लोभ में तत्पर हो गए।')

मू०—रामशय्याशोधयन्ती ताम्बूलीरामदायिनी ।
सीताबिलासरसिकः सीताशृंगारसाधकः ।। २७ ।।
रत्नशय्यास्थितवती रामाज्ञापरिपालिनी ।
सीताशीलमहानन्दः सीताकुण्डलताड़ितः ।। २८ ।।
प्रमोदारण्यक्रीड़न्ती शुभगादिविहारिणी ।
महारासकरस्तन्त्री गीतानन्दप्रगायकः ।। २९ ।।
हिंडोललीलारसिका हिंडोलगानतत्परा ।
सीतागानश्रवणदः सीतादर्शनलोलुपः ।। ३० ।।
ससखीपुष्पचयिनी मालाकंकणसाधिनी ।
सर्वशृंगारसम्पन्नः सीतासम्मुखप्रापकः ।। ३१ ।।
सखीलज्जाकृतमुखी निजमन्दिरगामिनी ।
पितृलज्जालुनयनः पितृसम्मुखप्रापकः ।। ३२ ।।
अम्भोजधूलिगौरांगी नीलाम्बरपरीबृता ।
नीलरत्नप्रतीकाशः पीताम्बरसमाबृतः ।। ३३ ।।

कोमलांगी विशालाक्षी सुन्दरी गजगामिनी ।
काकपक्षधरः शुभ्रः कम्बुग्रीवः स्मिताननः ।। ३४ ।।

टीका—'रामाशय्याशोधयन्ती' तथा 'ताम्बूलीरामदायिनी' श्री राम जी की शय्या (पलंग) को 'शोधन करने वाली, तथा श्री राम जी को ताम्बूल (पान का बीड़ा) प्रदान करने वाली। तात्पर्य यह है कि श्रीकिशोरी जी, श्री रामजी के पलंग को सजा कर दोनों ही (श्री युगलसरकार) उस पर आराम करते हैं और आपस में पान के बीड़े का आदान प्रदान करते हैं। इसी कारण ये दोनों नाम श्री किशोरी जी के हैं। 'सीताबिलासरसिकः' तथा 'सीताशृंगारसाधकः'—श्री किशोरी जी के विलास के रसिक तथा श्री किशोरी जी के शृंगार करने वाले श्रीराम जी हैं अतः ये दोनों श्रीरामजी के नाम हैं। 'रामशय्यास्थितिवती'—श्री राम जी के पलंग पर बैठने वाली रामाज्ञापरिपालिनी—श्री राम जी की आज्ञा का परिपालन करने वाली। 'सीताशीलमहानन्दः'—श्री सीता जी के शील स्वभाव से परम आनन्दित होने वाले। 'सीताकुण्डलताडितः', श्री सीता जी के कुण्डल से ताड़ित अर्थात नर्मव्यवहारों से श्री किशोरी जी ने अपने कपोलों से श्री प्रिय जू के कपोलों पर प्रहार किया है। 'प्रमोदारण्यक्रीडन्ती'—श्री प्रमोदबन में क्रीडा करने वाली। 'शुभगादिविहारिणी'—शुभगा आदि अपनी सखियों के साथ विहार करने वाली। 'महारासकरः'—महारास को करने वाले। श्री रामजी का रास करना सर्वत्र प्रसिद्ध नहीं है, इस कारण महापुरुष यह बताते हैं कि आपने रास किया तो है पर गुप्त रुप से। आप चक्रवर्तीनन्दन हैं, अतएव महर्षियों ने भी आपके रासबिहार का गुप्त भाषा में ही वर्णन किया है। प्रमाण—बाल्मीकीय रामायण उत्तरकाण्डः 'उपानृत्यंत राजानं नृत्यगीतविशारदाः……मनोभिरामा रामास्ता रामो रमयतां वरः। रमयामास

धर्मात्मा नित्यं परम भूषिता:।। आदि वर्णन आता है। कौशलखण्ड, शिवसंहिता हनुमत्संहिता आदि ग्रन्थों में तो सविस्तार रास का वर्णन है और श्री स्वामी श्री हर्याचार्य जी ने तो उपर्युक्त शंका का निराकरण करते हुए लिखा है कि "श्री रामस्य समस्त भूपतिमणेर्यन्नृत्य कौतूहलं, तत्तस्मिन् नहि दुर्घटं रसिकतासम्भाजि सर्वेश्वरे।। इत्थं यत्खलु भारती भगवतः सम्वीक्ष्यते विस्फुटं वाल्मीकस्य, ततो रघूद्वहधियो नृत्यं वितन्वन्तु तत्"।। इति श्री जानकी गीते। अर्थात्—समस्त भूपतियों के मणि श्री रामचन्द्र जी के नृत्य, कौतूहल, रास आदि का जो वर्णन है सो उनमें दुर्घट नहीं है क्योंकि आप रसिकता के सम्भाजन और सर्वेश्वर हैं। इस बात को प्रतिपादित करने वाली बाणी भगवान् महर्षि श्री वाल्मीकि जी की उत्तर काण्ड में स्पष्ट दीखती है। अतः रघूद्वह श्री रामजी में भक्ति बनाये रखने वाले हे महात्माओं ! आप सब निःशंक भाव से रास क्रीड़ा का विस्तार करें तथा करायें। 'तन्त्री' तंत्री बजाने वाले। अथवा 'तन्त्रीगीतानन्दप्रगायकः'—यह एक ही नाम है, जिसका अर्थ यह है कि तन्त्रीगीत के साथ आनन्दपूर्वक गान करने वाले या 'तन्त्रीगीतानन्दप्रदायकः' तन्त्री वाद्य के साथ गान करके आनन्द प्रदान करने वाले। 'हिंडोललीलारसिका'—हिंडोललीला (झूलनोत्सव) के रस का आस्वादन करने वाली। 'हिंडोलगीतत्परा'—हिंडोल पर गीत गाने में परायण श्री किशोरी जी। 'सीतागानश्रवणदः,—श्री सीता जी के गान को दत्तचित्त हो सुनने वाले। 'सीतादर्शनलोलुपः,—श्रीसीता जी के दर्शन के लिये लालायित श्रीराम चन्द्र जी। 'ससखीपुष्पचयिनी'—सखियों के सहित (श्रीराजनन्दन जू का पुष्प शृंगार करने के लिये) पुष्पों का संचय करने वाली और उन्हीं पुष्पों से माला और कंकण को साधने (बनाने) वाली हैं अतएव 'मालाकंकणसाधिनी' नाम है। सर्वशृंगार सम्पन्नः—सम्पूर्ण शृंगार से युक्त अर्थात् जब श्री किशोरी जी सखियों सहित कुसुम चयन कर उन के बस आभूषण वस्त्र बनाकर श्री प्रियतम जू का सिंगार करती हैं तब श्री रामजी

सर्व सिंगार सम्पन्न हो जाते हैं। सीतासम्मुखप्रापकः'—श्री सीताजी के सम्मुख प्राप्त होने वाले ससखी लज्जाकृतमुखी "निजमन्दिरगामिनी" सखियों में लज्जितसदृशमुखवाली और अपने मन्दिर में गमन करने वाली ये दोनों नाम श्री किशोरी जी के हैं। और श्रीपिता जी के सामने लज्जा शील नयन और पिता जी के सम्मुख प्राप्त होने वाले श्री राम जी हैं अत. पितृलज्जालुनयन और पितृ सम्मुख प्रापकः, ये दोनों नाम उनके हैं।। अम्भोजधूलिगौरांगी—कमल की धूलि (पराग) के समान गौर (पीत) अंग वाली। 'नीलाम्बरपरिवृता'—नीले रंग की साड़ी धारण करने वाली तात्पर्य यह है कि प्रियतम जू (श्री रामचन्द्र जी) के अंग का रंग श्याम है, अतएव जो पदार्थ श्री प्रिय जू के रंग समान हैं वह आप को अति प्रिय हैं, अतः नील वस्त्र को धारण किये हैं। 'नीलरत्नप्रतीकासः'—नीलरत्न के समान कान्तिवाले। 'पीताम्बरसमावृतः'—पीताम्बर को धारण करने वाले। 'कोमलांगी'—कोमल अंग वाली। 'विशालाक्षी'—विशाल नेत्र वाली। 'सुन्दरी'—सुन्दर स्वरूपा। 'गजगामिनी'—हाथी के समान मदमाती चाल से चलने वाली। 'काकपक्षधरः'—'काकपक्ष' (जुल्फों) को धारण किये हुये। 'शुभ्रः'—शुभ्र निर्मल अंग वाले (सुन्दर) 'कम्बुग्रीवः'—कम्बू (शंख) के सदृश ग्रीवा वाले। 'स्मिताननः'—मन्द मन्द मुस्काने वाले श्री राम चन्द्र।

मू०—पद्मिनी हंसगमना रामशोभाब्धिसंस्थिता ।
सीतामुखाब्जमार्तण्डः श्रीमान् दासरथिःसुधीः ।। ३५ ।।
रामाग्रेसंस्थितानित्यं लाजाहोमप्रकुर्वती ।
सीताग्रकृतश्रीरामो यज्ञाग्निसम्प्रदक्षिणः ।। ३६ ।।

अन्वारोहपदा सीता विवाहविधिसंस्कृता ।
सीताशिरोदसिन्दूरः विदेहकरस्वस्तिधृक् ।। ३७ ।।
ललिताम्बरधरा सीतासर्वालंकारसाधिनी ।
सपत्निग्रन्थिबद्धश्च कौतुकागार मध्यगः ।। ३८ ।।
युवति प्रसाधिता सीता हविः कान्तसुखप्रदा ।
रामो लज्जालुनयनो जानकी सुखदो हरिः ।। ३९ ।।
रुदन्ती साश्रु नयना मातृकण्ठनिरीक्षती ।
श्वश्रू पादनमस्कर्ता मैथिलेनाभिपूजितः ।। ४० ।।
मातृविसजता सीता स्वकान्तसहगामिनी ।
श्रीरामो जानकीयुक्तःयानस्थश्च स्ववेश्मगः ।। ४१ ।।

टीका—'पद्मिनी'—कमल के समान सर्वांग सुन्दरी। 'हंसगमना'—हंस के समान चलने वाली। 'रामशोभाब्धिसंस्थिता'—श्री रामचन्द्र जी की शोभारूपी समुद्र में स्थित अर्थात् निरन्तर श्री रामचन्द्र जी की शोभा का अवलोकन करने वाली। 'सीतामुखाब्जमार्तण्ड'—श्री सीता जी के मुख रूपी कमल के प्रकाशक (सूर्य) श्रीरामचन्द्र जी। 'श्रीमान्'—प्रकाश लक्ष्मी वाले 'दासरथिः'—श्री दशरथ जी महाराज के पुत्र। 'सुधीः'—सुन्दर (प्रखर) बुद्धि वाले। 'रामाग्रेसंस्थिता'-विवाह के समय भौंरी करते हुए श्री राम जी के आगे स्थित (रहने) वाली। 'लाजाहोमप्रकुवर्ती' धान के लावा से होम करने वाली। 'सीताग्रकृतश्रीरामः'—भौंरी करते हुए श्री रामचन्द्र जी श्री सीता जी को आगे कर सप्तपदी करते हैं, अतः यह नाम है 'यज्ञाग्निसम्प्रदक्षिणः'—विवाह में यज्ञीय अग्नि की प्रदक्षिणा करने वाले। 'अन्वारोहपदा'—विवाह में पीढ़ा (काष्ठ) आरोहण करने वाली अर्थात्

विवाह में भौरी हो जाने के बाद जब पीढ़ा बदला जाता है, कन्या दाहिने भाग से पति के बायें भाग में जाती है उसी विधि को करते समय किशोरी जी की यह अभिधा है। 'सीता' षिध् गत्यां, विं बन्धने, विधु संराद्धौ, षिधु शास्त्रमांगल्ये चषोऽन्तकर्मणि इन धातुओं से कर्म में क्त प्रत्यय करने से और निपातनाद्दीर्घ, तथा टाप कर देने पर सीता शब्द सिद्ध होता है। जिसके अर्थ ये होते हैं कि जिसके द्वारा भक्तजन मोक्षपद को प्राप्त करें अथवा परात्परपुरुष श्री राम जी का साक्षात्कार प्रत्यक्ष दर्शन को प्राप्त करें। तात्पर्य यह है कि गति के गमन, ज्ञान, प्राप्ति, मोक्ष रूप चार अर्थ होने से शरणागत जीवों को प्रभु के चरण की शरण में गमन करानेवाली, अपने प्रिय सेवकों को प्रभु का नित्य कैंकर्य की प्राप्ति कराने वाली और प्रेमा परा भक्ति परायण प्रेमियों को नित्य साकेत धाम रूप मोक्ष को प्रदान कराने वाली श्री सीता जी हैं यह षिध् गत्यां धातु से निष्पन्न सीता शब्द का अर्थ है। षिञ् बन्धने से व्युत्पन्न श्री सीता शब्द का यह अर्थ है कि आश्रितों के अपराधों से रुष्ट हुए प्रभु को अपने हाव भाव कटाक्षों से वश में कर प्रसन्न कराने वाली अथवा जो अपने दिब्य वैभव के द्वारा श्री प्रियतम जू को वश में कर लेने वाली या प्रेम भक्ति भाव के प्रेमी भक्तजन जिनके द्वारा चराणानुराग में बंध जांय उनको श्री सीता जी कहते हैं। षिधु संराद्धौ से निष्पन्न उक्त शब्द का अर्थ है कि जो सब प्रकार से मोक्ष एद वाचक सिद्धान्त को प्रदान कर भक्त्यादि को निष्पन्न कराने वाली श्री किशोरी जी हैं। षिधु शास्त्र मांगल्ये च धातु से निष्पन्न उक्त शब्दार्थ यह है कि शास्त्रानुकूल सदैव मंगलमय श्री प्रियतम जू के नित्य कैंकर्य की आज्ञा प्रदान कराने वाली श्री किशोरी जी हैं और षोऽन्त कर्मणि धातु से निष्पन्न सीता शब्द का अर्थ यह है कि प्रलय काल में समस्त ब्रह्माण्डों का अन्त करने वाली अथवा समस्त दुष्ट दैत्य दानव राक्षसों का नाश कर ऋषि मुनि साधु ब्राह्मण गौ देवता आदि को सुखी

करने वाली हैं। अतः श्री किशोरी जी का यह श्री सीता नाम है 'विवाह विधि संस्कृता, विवाह की समस्त विधि से संस्कृता श्री किशोरी जी हैं' 'सीताशिरोदसिन्दूरः'—श्री सीता जी के शिर में सिन्दूर दान करने वाले। 'विदेहकरस्वस्तिधृक्'—श्री विदेहजी के हाथ से स्वस्ति को धारण करने वाले ललिताम्बरधरा ललित (मनोहर बहुमूल्य) वस्त्रों को धारण करने वाली। 'श्रीसीतासर्वलंकारसाधिनी'—सब अलंकारों को साधन किये अर्थात् सब अलंकारों से अलंकृता। 'सपत्नी ग्रन्थिबद्धः'—श्री किशोरी जी के साथ ग्रन्थिबन्धन करने वाले। कोतुकागारमध्यगः"—कोहबर के मध्य में बिराजे हुए श्री राम जी 'युवतीप्रसाधिता सीता'—युवतियों के द्वारा अलंकार की गई श्री किशोरी जी। 'हविः कान्तसुखप्रदा'—हवि की तरह श्री कान्त जी को सुख देने वाली अर्थात् अग्नि की भार्या हवि जिस प्रकार अग्नि को सुख देती है, उसी प्रकार श्री प्रिय, श्री राम जी को सुख देने वाली हैं। 'रामः'—कौतुकागार में सब को रमाने (मोहने वाले)। 'लज्जालुनयनः'—(कौतुकागार में श्री सिद्धी जी आदि द्वारा व्यंग वचनों को सुनकर) लज्जायुक्त नयन वाले। 'जानकीसुखदः'—श्री जानकी जी को सुख देने वाले। हरिः—धनुष टूटने के पहले के जितने ताप थे उन सब को हरने वाले। (जनकपुर से जब बारात श्रीअयोध्या जी को वापिस विदा हुई, उस समय श्री युगल सरकार की अवस्था देख कर अग्रिम नाम है।) 'रुदन्ती'—श्री सुनयना माता से विदा होते समय रोती हैं और अश्रुपूर्ण नेत्र हैं अतः श्री किशोरी जी का 'साश्रुनयना' नाम है 'मातृकण्ठनिरीक्षती'—विदा के समय श्री सुनयना माता के कण्ठ को देखने वाली। 'श्वश्रु पादनमस्कर्त्ता'—श्री जनकपुर से विदा के समय (सास) के चरणों में नमस्कार करने वाले। मैथिलेनाभिपूजतिः—श्री मिथिलेश जू से अभिपूजित। 'मातविसर्जिता सीता'—श्री माता जी ने आप को विदा किया, अतः यह नाम

है। 'स्वकान्तसहगच्छती'—अपने कान्त (पति श्री राम जी) के साथ चलीं अतः श्री किशोरी जी का यह नाम है। 'श्रीरामः' श्री शोभा से युक्त होकर रमाने वाले। 'जानकी युक्तः'—श्री जानकी जी के साथ श्री राम जी। 'यानस्थ'—रथ पर बैठे हुए 'स्ववेशमगः'—अपने घर को जा रहे अर्थात् जब श्री रामचन्द्रजी ने विवाह के बाद श्री जानकी जी को विदा करा श्री अयोध्या को प्रस्थान किया, तब का यह नाम है।

मू०—लज्जालुनयना सीता यानगा कान्तपश्यती ।
x गच्छमानः स्वनगरंभार्गवं विमदं कृतः ।। ४२ ।।
परशुरामपूजिता सौभाग्यवरलाभिनी ।
शिरमौरधरः कान्तो निजमन्दिरद्वारगः ।। ४३ ।।
श्वशुरद्वारगा सीता राजद्वाराभिपूजिता ।
कान्तय सहितो रामःकौतुकागारशोभितः ।। ४४ ।।
राजांगनामध्यसंस्था गुरुभार्यापदानता ।
गुणाकारो रासकारी जयशीलोऽतिकेलिकृत् ।। ४५ ।।
रत्नसिंहासनास्था च सुभगा कमलावृता ।
मन्दिस्मितो मनोहारी युवती मण्डलास्थितः ।। ४६ ।।
राम स्वरामोभजिता रम्भाद्यानृत्यभावितां ।
कोमलांगो घनश्यामो बिवाहाम्बरभूषणः ।। ४७ ।।

---

x अपाणिनीयाप्ययमाषत्वात्साधुः ।

जानकी रूपशीला च सवनारीप्रशंसिता ।
प्रियालावण्यमग्नात्मा प्रियाशृंगाररसाधकः ।। ४८ ।।
अयोध्यापरमानन्दा परमाह्लादपश्यती ।
जानकी सह पश्यन् वै हाटशोभां मनोहरः ।। ४९ ।।
यौवराज्यश्रु ताद्धर्षात् स्वर्णरतनादिदानदा ।
बशिष्ठाज्ञाकृतः शुद्धः यौवराज्याभिसंयमः ।। ५० ।।

टीका—'लज्जालुनयना'—लज्जा युक्त नेत्र वाली। 'यानगा'—रथ पर बैठी। 'कान्त पश्यती'—श्री कान्त (श्रीप्रियतम जू) को देखती हैं। 'गच्छमानः स्वनगरं भार्गवं विमदं कृतः'—श्री अयोध्याजी को जाते समय रास्ते में परशुरामजी के घमण्ड को चूर करने वाले श्रीरामचन्द्र जी 'परशुरामपूजिताः'—श्रीपरशुरामजी से पूजित श्री किशोरी जी अथवा श्रीपरशुराम जी की पूजा श्रीकिशोरीजी ने ब्राह्मण बुद्धि से की। अतः 'सौभाग्यवरलाभिनी'—परशुराम जी से सौभाग्यवती होवो ऐसे वरदान को पाने वाली। 'शिरमौरधरः'—शिर पर मौर को धारण किये हुए। 'कान्तः'—कमनीय (मनोहर वैवाहिक भूषणभूषित) 'निजमन्दिरद्वारगः'—श्री अयोध्या जी में अपने महल के द्वार पर पहुँचे अर्थात् श्री मिथिलाजी से आकर द्वार पर पहुंचे····श्री राम जी। 'श्वशुरद्वारगासीता'—अपने श्वशुर (श्री दशरथ जी) के द्वार पर पहुंची तथा 'राजद्वाराभिपूजिता' राजद्वार (श्री राजमहल) पर पूजिता (परिछन की गई) (कान्ता सहित रामस्तु) 'कान्तया सहितो रामः'—श्री कान्ता जी (श्री किशोरी जी) के सहित श्री राम जी। राम शब्द की व्युत्पत्ति यों है स्वाश्रितेभ्योऽखिलान् धर्मार्थकाममोक्षान् ददाति—इति रामः [अर्थात् अपने आश्रित भक्तों को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष,

देने वाले यद्वा मही स्थितः सन् राजते सर्वेभ्योऽधिकतरं राजते शोभते इति रामः अर्थात् पृथ्वी पर रहते हुए सबसे अधिक शोभा देने वाले यद्वा धर्म रक्षण पूर्वक शरणागत रक्षणाय राक्षसान् मारयतीति रामः अर्थात् धर्म की रक्षा करते हुए शरण में आये भक्तों के रक्षार्थ राक्षसों को मारने वाले। राक्षसानां मरणं येन स रामः अर्थात् जिनसे राक्षसों का मरण होवे वे राम हैं यद्वा रमन्ते क्रीडन्ते योगिनोऽस्मिन्निति रामः अर्थात् जिनमें योगी लोग रमण करें अर्थात् जिनके चिन्तन में योगी हमेशा ध्यान मग्न रहते हैं उन्हें राम कहते हैं। 'कौतुकागारशोभितः'—श्री अयोध्या जी में कंगन खुलाई आदि के समय सुन्दर मण्डप में शोभित हैं, अतः यह नाम है। 'राजांगनामध्यसंस्था'—राजांगना (श्री कौशल्या, अम्बा आदि) के मध्य में बैठी और अरुन्धती आदि गुरु पत्नियों के चरणों में नमन करने से 'गुरुभार्यापदानता' ये दोनों नाम हैं। 'गुणाकरः'—वेदान्त में और श्री बाल्मीकीय रामायण आदि ग्रन्थों में जितने सौन्दर्य, माधुर्य, औदार्य, आदि गुण कहे गये हैं उनके निधि श्री राम जी हैं। 'रासकारी'—रास को करने वाले। 'जयशील'—विजयी स्वभाव वाले। 'अलिकेलिकृत्'—अत्यंत क्रीड़ा करने वाले अर्थात् नाना प्रकार की लीलाओं को करने वाले। 'रत्नसिंहासनस्था'—रत्नसिंहासन के ऊपर विराजी हुई सीता 'सुभगाकमलावृता'—श्री सुभगा जी तथा श्री कमला जी आदि सखियों से आवृत्त् (सेवित) 'मन्दस्मितः'—मन्द मन्द मुस्काने वाले। 'मनोहरः'—मन को हरने वाले। 'युवतीमण्डल स्थितः'—कोहबर में युवतियों के झुण्ड में बैठे हुए श्री राम जी। 'रमा, अपने दिव्य गुणों से चराचर को सुख पहुँचाने वाली 'स्वरामाभिजिता'—अपनी सखी सहेलियों से अभिजिता हैं। 'रम्भाद्यानृत्यभाविता,—अपनी संगीत तथा नृत्य कलादि से रम्भादि अप्सराओं को तिरस्कृत करने वाली। 'कोमलांगः' कोमल अंग वाले।

'घनश्यामः'—मेघ के समान श्याम वर्ण वाले। 'विवाहाम्बरभूषणः'—विवाह के वस्त्र तथा आभूषणों को धारण किये हुए। 'जानकी'—श्री जनक जी महाराज की कन्या। 'रूपशीला'—सुन्दर रूप और शील वाली। 'सर्वनारीप्रशंसिता'—सब नारियों से प्रशंसित अर्थात् जब श्री किशोरी जी अयोध्या जी में चली आईं और मुख दिखौनी का उत्सव हुआ तब आप के रूप और शील को देखकर सब ने प्रशंसा की। 'प्रियलावण्यमग्नात्मा'—श्रीप्रियाजी की सुन्दरता पर मुग्ध श्रीरामचन्द्र जी 'प्रियाशृंगारसाधकः'—श्री प्रियाजू के शृंगार करने में प्रवीण। 'अयोध्या परमानन्दा'—श्रीअयोध्या जी को परम आनन्द देने वाली। 'परमाह्लादपश्यती'—परम आह्लाद (आनन्द विभोरता) को देखने व दिखाने वाली। 'जानकी सह पश्यन् वैहाटशोभाँ'—श्रीकिशोरी जी के सहित बाजार की शोभा को देखने वाले और मनोहरः,—अपने दिव्य सौंदर्य से सब के मन को हर लेने वाले। तात्पर्य यह है कि जब आप विवाहित होकर श्री अयोध्या जी में आकर श्रीकिशोरी जी सहित बाजार में भ्रमणार्थ निकले तो सबके मन और दृष्टि को हर लिया। यद्यपि पहले भी मनोहर थे, लेकिन इस समय श्रीकिशोरी जी के सहित विशेष मन को हरते हैं। 'यौवराज्यश्रुताद्धर्षात्'—प्रातःकाल ही युवराजपद श्रीराम चन्द्र जी को मिलेगा, ऐसा किशोरी जी सुनकर हर्ष से सुवर्णादि रत्न को बांटने लगीं। अतः आप 'स्वर्णरत्नादि दानदा हुईं। 'श्री वशिष्ठाज्ञाकृतः,—श्री वशिष्ठ जी की आज्ञा का पालन करने वाले। महाराज दशरथ जी के अपनी समस्त प्रकृति सहित राम जी को राजगद्दी प्रदान करने का निश्चय करने पर श्री वशिष्ठ जी ने श्रीरामजी को सपत्नीक व्रत करने की आज्ञा दी तथा श्रीरामचन्द्र जी ने अपने गुरुआज्ञा का पालन किया। 'राजशुद्धः'—व्रत से शुद्ध हुए। 'यौवराज्याभिसंयमः'—यौवराज्य के लिए संयम करने वाले।

अर्थात् वशिष्ठ जी की आज्ञा से रात्रि में आपने संयम किया, कुशासन पर सोये, ब्रह्मचर्य्य से रहे इत्यादि।

मू०—पतिदेवरसंयुक्ता वनवासमुपेयुषी ।
शृंगवेरपुरं प्राप्तः पितुराज्ञापुरस्कृतः ।। ५१ ।।
गंगाविनयकर्त्री च गंगापारोत्तरानुगा ।
निषादमित्र परमः जटावल्कलधारकः ।। ५२ ।।
सुमन्तहर्षदा धन्या रामलक्ष्मणमध्यगा ।
भरद्वाजाश्रमगतः तृप्तश्च ऋषिपूजितः ।। ५३ ।।

टीका—'पतिदेवर संयुक्ता'—पति श्रीरामचन्द्रजी तथा देवर श्री लक्ष्मणजी के साथ। 'वनवासमुपेयुषी'—वनवास को जाने वाली श्री किशोरी जी। शृंगवेरपुरं प्राप्तः,। सिंगवेरपुर में पहुंचे 'पितुः आज्ञापुरस्कृतः'—पिताजी की आज्ञा को आगे किया अर्थात् जाने को अपने मन में पहले से ही निश्चय कर लिया था, क्योंकि देवताओं की शरणागति तथा ऋषियों की शरणागति का फल देना है। परंच पिता जी की आज्ञा को ब्याज करके गये, अतः यह नाम है। 'गंगाविनयकर्त्री'—गंगा से विनय करने वाली। श्रीकिशोरी जी ने गंगा जी से विनय किया था 'पुत्रो दशरथ स्यायं महाराजस्य धीमतः। निदेशं पारयित्वेमं गंगे त्वदभिरक्षितः।। चतुर्दशहि वर्षाणि समग्राण्युष्य कानने। भ्राता सह मया चैव पुनः प्रत्यागमिष्यति।। ततस्त्वां देवि सुभगे क्षेमेण पुनरागता। प्रेक्ष्ये प्रमुदिता गंगे, सर्वकाम समृद्धिनी।।....' इत्यादि 'गंगापारोत्त्रानुगा'—गंगा के पार उत्तर की ओर पीछे चलने वाली [उत्तर की ओर चलने का भाव यह है कि गंगा के पार

दक्षिण को चलना अशुभ है, अतः पहले कुछ उत्तर को चले और फिर प्रयाग को चले क्योंकि 'प्रयाणमांगल्यनिमित्त्दर्शनात्' । 'निषादमित्रपरमः'—श्रीरामजी के निषादराज परममित्र हैं अतः रामजी का यह नाम है। जटावल्कल धारकः,—जटा और बल्कलों को धारण करने वाले। सुमन्त हर्षदां—श्री सुमन्त जी को हर्ष देने वाली। 'धन्या,—धन्यवाद योग्य। राम लक्ष्मण मध्यगा,—श्री रामलक्ष्मण के मध्य चलनेवाली क्योंकि 'अग्रतो गच्छ सौमित्र सीता त्यामनुगच्छतु पष्ठतोऽहं गमिष्या म त्वां च सीतां च पालयन्।। आगे लक्ष्मण जी चलें और आपके पीछे सीता जी चलें और सीता ज़ी तथा आपकी रक्षा करता हुआ मैं पीछे-पीछे चलूंगा, अतः दोनों भ्राताओं के मध्य में किशोरी जी हैं। 'भरद्वाजआश्रमगतः'—श्रीभरद्वाज महर्षि के आश्रम में पहुंचे। तृप्तः,—सन्तुष्ट। 'ऋषि—पूजितः',—श्रीभरद्वाज महर्षि से पूजित।

मू०—अनसूयाशिक्षावती महाशृंगारशोभिता ।
अत्रिपूजाजागृहीतात्मा वाल्मीकि ऋषिवंदितः।। ५४।।
चित्रकूटं निवसिता रामोच्छिष्टप्रभोजिनो ।
पर्णशाला निवसितः कन्दमूलाशनप्रियः।। ५५।।
मन्दाकिनीस्नानकर्त्री मन्दाकिनीजलप्रिया ।
जयन्त नेत्रहर्त्ता चस्फटिकादिशिलास्थितः।। ५६।।
श्वश्रूदर्शनकर्त्री च गुरुपत्नीपदानता ।
भरतालिंगितो रामः गुरुपत्नी पदानतः।। ५७।।
श्वश्वाऽशीर्गृहीता च श्वश्रूक्रोडनिवासिनी ।
पितृश्राद्धप्रपूजायामिंगु दीफलपिण्डदः।। ५८।।

श्वश्रू शृंगाररचिता श्वश्रूशासनकारिणी ।
वशिष्ठाय नमस्कर्त्ता भरतायांघ्रि पीठदः ।। ५६ ।।
सुतीक्ष्णबंदिता पूज्याशरभगाश्रमवासिनी ।
शरभंगमुक्तिदाता घटयोनिप्रपूजितः ।। ६० ।।

टीका—'अनुसूयाशिक्षवती'—अनुसूया जी की शिक्षा को सुनकर मानने वाली। (श्री किशोरी जी ने जब अत्री मुनि के आश्रम में अपने प्रियतम सहित पहुंच कर अनुसूयाजी के दर्शन किये। उक्त अवसर पर अनुसूया जी ने श्री किशोरी जी को पतिव्रत धर्म की शिक्षा दी, जिसे आप ने ग्रहण कर उसका अनुसरण किया।) श्री किशोरी जी की भक्ति से प्रसन्न होकर अनुसूया जी ने बहुमूल्य दिव्य वस्त्रों को प्रदान किया। उन्हीं दिव्य वस्त्रों को धारण कर आप 'महाशृंगारशोभिता'—महाशृंगार से सुशोभित हुईं। 'अत्रिपूजामृहीतात्मा'—श्री अत्रि महर्षि की की हुई पूजा को ग्रहण करने वाले। बाल्मीकिऋषिवन्दितः,—बाल्मीकि महर्षि से वन्दित अर्थात् बाल्मीकि जी ने जिनकी स्तुति वन्दना आदि की है। 'चित्रकूटंनिवसिता' चित्रकूट पर्वत पर निवास किये। 'रामोच्छिष्टमभोजिनी'—श्री राम जी की सीत प्रसादी (उचिष्ट, जूठा) को भोजन करने वाली। 'पर्णशालानिवसितः'—चित्रकूट में (पर्ण) पत्तों की झोंपड़ी में वास करने वाले। 'कन्दमूलाशनप्रियः'—कन्दमूल के भोजन को प्रिय मानने वाले। 'मन्दाकिनीस्नानकर्त्री'—श्री मन्दाकिनी में स्नान करने वाली। 'मन्दाकिनीजलप्रिया'—मन्दाकिनी का जल श्री किशोरी जी को प्रिय है। 'जयन्तनेत्रहर्ता' इन्द्रपुत्र जयन्त की आंख को हरने वाले। 'स्फटिकादिशिलास्थितः'—स्फटिक आदि शिलाओं पर बैठने वाले। श्वश्रूदर्शन कर्त्री—श्री कौशल्या माता के दर्शन करने वाली। 'गुरुपत्नीपदानता'—गुरुपत्नी (अरुन्धती आदि पूज्य वर्गों) के चरणों में

नमस्कार करने वाली। 'भरतालिंगतोराम:'—चित्रकूट में श्री रामचन्द्र जी ने श्री भरत जी का आलिंगन किया, अत: यह नाम है। 'गुरुपत्नीपदानत:'—गुरुपत्नियों के चरणों में नमस्कार करने वाले 'श्वश्वाऽऽशीर्गृहीता'—श्वश्रू (श्री कौशल्या जी) के आशीर्वाद को ग्रहण करने वाली। 'श्वश्रूक्रोड़निवासिनी' श्री कौशल्या जी की गोद में बैठने वाली। 'पितृश्राद्धप्रपूजायामिंगुदीफलपिण्डद:'—पितृश्राद्ध में श्री पिता जी को इंगुदी फलों के पिण्ड को देने वाले श्वश्रूशृंगाररचिता—चित्रकूट में श्री कौशल्या माता ने श्री किशोरी जी का शृंगार किया। अत: यह नाम है। 'श्वश्रूशासनकारिणी'—श्री कौशल्या जी की आज्ञा को पालन करने वाली। 'वसिष्ठाय नमस्कर्त्ता'—श्री वसिष्ठ जी को नमस्कार करने वाले। 'भरतायांगिपीठद:'—श्री भरत लाल जी को चरण पादुका देने वाले। 'सुतीक्ष्णवन्दिता,—सुतीक्ष्ण जी से वन्दिता (पूजिता) 'पूज्या'—पूजन योग्य श्री किशोरी जी। 'शरभंगाश्रमवासिनी'—श्री शरभंग जी के आश्रम में वास करने वाली। 'शरभंगमुक्तिदाता'—श्री शरभंग जी को मुक्ति देने वाले। 'पटयोनि प्रपूजित:' पटयोनि—(अगस्त्य जी) से पूजित श्रीराम चन्द्र जी।

मू०—पंचवटणं वासकर्त्री मायामृगविमोहिनी ।
मायामृगानुगामी च मारीच प्राणहारक: ।। ६१ ।।
मायारूपं कृतवती भूभारातिविनाशिनो ।
खरदूषण त्रिशिरोविराध वधप्रण्डित: ।। ६२ ।।
लंकाशोकवनस्था च त्रिजटादिसुसेविता ।
कबन्धभुजच्छेता च जटायुर्मोक्षदायक: ।। ६३ ।।

सरमां सखीं कृतवती श्रीरामविरहाकुला ।
शबरी मोक्षदाता च सुकण्ठमित्रपालकः ।। ६४ ।।
एकवेणीरधोदृष्टी राम राम विलापिनी ।
सीताशोकपरिश्रान्तः हनुमल्लक्ष्मणबोधितः ।। ६५ ।।

टीका—'पंचवट्यां वासकर्त्री'—पंचवटी में वास करने वाली। 'मायामृगविमोहिनी'—मायामृग पर विमोहित हो जाने वाली। 'मायामृगनुगामी'—मायामृग के पीछे पीछे दौड़ने वाले 'मारीच प्राणहारकः'—मारीच के प्राणों को हरने वाले। 'मायारुपंकृतवती'—मायामय रूप को करने वाली अर्थात् अपने वास्तविक रूप को अग्नि में स्थापित कर छाया रूप से लीलाओं को करने वाली। 'भूभारातिविनाशिनी'—पृथ्वी के भार को विनाश करने वाली। 'खरदूषणत्रिशिरोविराधवधपण्डितः'—खर, दूषण, त्रिशिरा, विराध, आदि शत्रुओं के नाश करने में पण्डित श्री रामचन्द्र जी। 'लंकाशोकवनस्था'—लंका के अशोक वन में बैठी श्री जानकी जी। 'त्रिजटादिसुसेविता'—त्रिजटादि राक्षसियों से सुसेविता श्री किशोरी जी। 'कबन्धभुजच्छेत्ता'—कबन्ध की भुजाओं को काटने वाले। 'जटायुर्मोक्षदायकः'—जटायु जी को मोक्ष देने वाले। 'सरमां सखीं कृतवती'। सरमा (विभीषण की पत्नी) को अपनी सखी बनाने वाली। 'श्री रामबिरहाकुला'—श्री राम जी के विरह में व्याकुल 'शबरी मोक्षदाता'—श्री शबरी जी को मोक्ष देने वाले। 'सुकण्ठ मित्र पालकः'—सुग्रीव जी के साथ मित्रता कर उनका पालन करने वाले। 'एकवेणी'—श्री राम जी के बिरह में श्री किशोरी जी के केशों की लट पड़ गई थी, अतः 'एकबेणी' नाम है। 'अधोदृष्टिः'—नीचे को देखने वाली। (नैषापश्यति राक्षस्यो नेमान् पुष्प फलद्रुमान् एकस्थहृदया नूनं राममेवानुपश्यति, अर्थात् न तो यह राक्षसियों को

देखती हैं और न फूले फले वृक्षों को, किन्तु एकाग्रचित से श्री राम जी को ही देखती हैं। 'सीताशोकपरिश्रान्तः,—श्री सीता के शोक से ब्याकुल। 'हनुमल्लक्ष्मणवोधितः'—शोकाकुल श्री रामचन्द्र को श्री हनुमान जी तथा श्री लक्ष्मण जी ने समझाया, अतः यह नाम है।

मू०—शिंशिपावृक्षमूलस्था निराहारातिनिर्जला ।
सप्त तालविभेदी च बालिप्राण बिनाशकः ।। ६६ ।।
राक्षसीतर्जिता सीता त्रिजटादि विवोधिता ।
ताराविज्ञानदश्चैव ताराशोकविनाशकः ।। ६७ ।।
त्रिजटाधैर्यधर्त्रींच सरमादुःखसंगिनी ।
अंगदसेवितांघ्रिश्च सुग्रीवसुखसाधकः ।। ६८ ।।
दण्डकारण्यवासिता पुण्यदक्षेत्रकारिणी ।
सुग्रीवराज्यदाता च सखिदुःखविनाशकः ।। ६९ ।।
दशरथात्मज पत्नी च राक्षिसीममध्यसंस्थिता ।
हनुमदंसबाही च सुग्रीवाध्यक्षसंयुतः ।। ७० ।।

टीका—'शिंशपावृक्षमूलस्था'—अशोकवाटिका में शिंशिपा वृक्ष के नीचे बैठी होने से श्री किशोरी जी का यह नाम है। 'निराहारातिनिर्जला'—भोजन और जल को त्याग कर लंका में रहने वाली। 'सप्ततालविभेदी'—सात ताल (ताड़) के वृक्षों को एक ही बार बेधने वाले। 'बालिप्राणविनाशकः'—बालि के प्राणों को नाश करने वाले। 'राक्षसीतर्जितासीता'—राक्षसियों द्वारा धमकायी जाने वाली। (रावण के आदेशानुसार श्री किशोरी जी को राक्षसियों ने अशोक वाटिका में धमकाया।) 'त्रिजटादिविवोधिता'—त्रिजटा

तथा सरमा आदि राक्षसियों ने श्री किशोरी जी को अशोकवाटिका में विविध प्रकार के मधुर वचनों से सान्त्वना प्रदान किया, अतः आप का यह नाम है। ताराविज्ञानदः बालि के संहार के बाद विलाप करती हुई बाली की स्त्री तारा को अपने सदुपदेश द्वारा उसके माया रूपी अज्ञान को दूर कर ज्ञानदान देने वाले। ताराशोकबिनाशकः ज्ञानदान देकर तारा के शोक को नाश करने वाले। त्रिजटाधैर्यकर्त्री त्रिजटा के सात्वनापूर्ण वचनों से धैर्य करने वाली। सरमादुःखसंगिनी सरमा (विभीषण की पत्नी जिसके दुःख की संगिनी अर्थात् श्री किशोरी जी।) अंगदसेवतादिः श्री अंगद जी जिनके चरणों की सेवा करते हैं। सुग्रीवसुखसाधकः श्री सुग्रीव जी के सुख के लिए प्रयत्न करने वाले। दण्डकारण्यवसिता दण्डकारण्य में वास करने वाली। पुण्यदक्षेत्रकर्त्री दण्डकारण्य में वास कर उसे पुण्यक्षेत्र करने वाली। सुग्रीवराज्यदाता श्री सुग्रीव जी को राज्य देने वाले। सखिदुःखविनाशकः सखा सुग्रीव के दुःख के नाशक। दशरथात्मज—पत्नी श्री दशरथ जी के पुत्र श्री राम जी की भार्या। राक्षसमध्यसंस्थिता अशोकवाटिका में राक्षसियों के बीच रहने वाली हनुमदंसवाही श्री हनुमान जी के कन्धों पर बैठकर चलने वाले जब लंका के लिये श्री राम जी ने प्रस्थान किया तो हनुमान जी के कन्धे पर बैठ कर चले। सुग्रीवाध्यक्षसंयुतः बानरी सेना के अध्यक्ष सुग्रीव के साथ श्री रामचन्द्र जी।

मू०—अशोकारामवसिता भयशोकविवर्धिनी ।
प्रवर्षणगिरिस्थाता वर्षा ॠतु विलोकनः ।। ७१ ।।
वननाशमहानन्दा हनुमद्बन्धनातुरा ।
लक्ष्मणप्रेषको रामः सुग्रीवभयदायकः ।। ७२ ।।

लंकादाहमहानन्दा रामागमनकांक्षिता ।
सीताशोकाभिसंगीतः सुग्रीवादिविवोधितः ।। ७३ ।।
सीरध्वजात्मजा बाला लंकेश्वरपुरस्थिता ।
समुद्रतीरगमनः सागरत्रासदायकः ।। ७४ ।।
धातृप्रकटमाना च असुरारण्यवासिता ।
समुद्रसेतुकरणः बालुकाशिवलिंगकृत् ।। ७५ ।।

टीका—अशोकारामबसिता लंका के अशोकवाटिका नामक बगीचे में बसने वाली। भयशोकविवर्धिनी अत्यन्त भयभीत तथा शोकाकुल होने वाली। प्रवर्षणगिरिस्थाता प्रवर्षण पर्वत पर वास करने वाले। वर्षाऋतुविलोकनः वर्षा ऋतु को देखने वाले अर्थात् वर्षा ऋतु की प्रतीक्षा करने वाले वर्षा ऋतु के बीतने पर श्री किशोरी जी के अनुसन्धान के लिये प्रयत्नशील होंगे। बननाशमहानन्दा लंका की अशोकवाटिका को श्री हनुमान जी द्वारा नष्ट हुई देख महानन्दित होने वाली। हनुमद्बन्धातुरा श्री हनुमान जी के बन्धन को सुनकर अत्यन्त दुःखित होने वाली। लक्ष्मण प्रेषको रामः वर्षाऋतु के व्यतीत हो जाने पर भी जब सुग्रीव जी ने श्री सातान्वेषण को कोई प्रयत्न नहीं किया। तब व्याकुल होकर श्री राम जी ने श्री लक्ष्मण जी को "भय दिखाय लै आवहु तात सखा सुग्रीव" कहकर भेजा श्री सुग्रीव भयदायकः श्री सुग्रीव जी को पारिहासिक भय देने वाले अथवा सुग्रीव जी ने जो प्रतिज्ञा की है उससे विचलित होते देख उसकी पूर्ति के लिए श्री सुग्रीव जी को दिखावटी भय देने वाले। 'लंकादाहमहानन्दा'—लंकापुरी के जलने से परमानन्दित होने वाली। 'रामगमनकांक्षिता' श्री राम जी के आगमन की आकांक्षा करने वाली। 'सीताशोकाभिसम्भीतः'—श्री सीता जी के शोक से चारों तरफ से भयभीत। सुग्रीवादिविवोधितः—श्री सुग्रीवादिकों से प्रबोधित। 'सीरध्वजात्मजा' श्री

सीरध्वज जी महाराज (श्री मिथिलेश जी) की कन्या। बाला कन्या। लंकेश्वरपुरस्थिता—लंकेश्वर रावण की पुरी लंका में स्थित श्री जानकी जी। समुद्रतीरगमनः किष्किन्धा से प्रस्थान कर समुद्र के तट पर आने वाले सागरत्रासदायकः समुद्र को भय देने वाले। धातृप्रकटमाना—श्री ब्रह्मा जी ने जिनके मान को प्रकट किया। असुरारण्यवसिता राक्षसों के बन अशोकवाटिका में वास करने वाली समुद्रसेतुकरणः समुद्र पर सेतु निर्माण करने वाले। बालुकाशिवलिंगकृत—बालुकानिर्मित श्री शिवलिंग की स्थापना करने वाले।

मू०—विकला परमामाया लंकामारिग्रहेश्वरी ।
रामेश्वरार्चनरतो रामेशमन्त्रजापकः।। ७६ ।।
बानरीवाद्यहर्षास्या दशास्यशापदायिनी ।
विभीषणशरणदस्तस्मै राज्याभिसाधकः।। ७७ ।।
युद्धोद्यमं श्रु तवती परमानन्दव्यापिनी ।
ऋक्ष बानरसेनाढ्य स्त्रिकूटाचलवासकृत्।। ७८ ।।
राक्षसीविधवाहर्षा राक्षसीरोदनप्रिया ।
सुग्रीवसचिवश्चैव विभीषण सहायवान्।। ७९ ।।
घोरसंग्रामशृण्वन्ती राक्षसीपरिचारिका ।
महायुद्धविचारी च द्वारमेर्कट प्रेरकः।। ८० ।।
राक्षसीमध्यवसिता रामदर्शनचित्तदा ।
सुग्रीवयुद्धप्रहितो विभीषणसहायवान्।। ८१ ।।

रामाशाजीवन धृता रामचिन्ताब्धिमग्निका ।
लक्ष्मणायोधहर्षास्यो मारुतात्मजवाहनः ।। ८२ ।।

टीका—'विकला'—श्रीप्रिय जू के वियोग में अत्यंत विकल। 'परमामाया'—सर्वोत्कृष्ट माया अर्थात् विचित्र शक्ति वाली। 'लंकामारिग्रहेश्वरी'—लंका नाश के हेतु महामारी ग्रह की स्वामिनी। 'रामेश्वरार्चनरतः'—रामेश्वर महादेव जी के पूजन में तत्पर। 'रामेशमन्त्रजापकः'—रामेश्वर महादेव जी के मंत्र को जापने वाले। 'वानरीवाद्यहर्षायास्या'—बानरी सेना के बाद्य (किलकारी) को सुन कर हर्षित मुख वाली। 'दशास्यशापदायिनी'—'दशास्य' (रावण) को शाप देने वाली। 'विभीषणशरणदः'—श्री विभीषण को शरण देने वाले। 'तस्मै राज्याभिसाधकः'—श्री विभीषण को राज्यतिलक साधने (देने) वाले। 'युद्धोद्यमंश्रुतवती'—तथा 'परमानन्दव्यापिनी'—युद्ध के प्रयत्न को सुनने वाली, तथा उसे सुनकर परम आनन्दित होने वाली। 'ऋषबानरसेनाढ्यः'—ऋक्ष (रीछ) और बानरों की सेना से युक्त। 'त्रिकूटचलवासकृत्'—त्रिकूट पर्वत पर वास करने वाले। 'राक्षसीविधवाहर्षा'—राक्षसियों के विधवा होने में हर्षित होने वाली। 'राक्षसीरोदनप्रिया'—राक्षसियों का रोदन जिनको प्रिय है ऐसी श्री सीता जी। 'सुग्रीवसचिवः'—श्री सुग्रीव जी महाराज जिनके मन्त्री हैं, अर्थात् श्री राम जी। 'विभीषणसहायवान'—श्री विभीषण जी जिनके सहायक हैं, अर्थात् श्री रामचन्द्र जी। 'घोरसंग्रामशृण्वन्ती'—घोर संग्राम के संवाद को सुनने वाली। 'राक्षसीपरिचारिका'—राक्षसी (सरमा जी) जिनकी सेवा करने वाली हैं। 'महायुद्धविचारी'—महायुद्ध की सम्भावना देखकर उसके विषय में विचार करने वाले। द्वारेमर्कटप्रेरकः—लंकेश्वर के द्वार पर बानरों को भेजने

वाले। राक्षसी मध्य वसिता राक्षसियों के मध्य में निवास करने वाली 'रामदर्शनचित्तदा'—श्री रामचन्द्र जी के दर्शनार्थ चित्त से उत्सुक। 'सुग्रीवयुद्धप्रहितः'—श्री सुग्रीव जी को युद्ध में भेजने वाले। 'विभीषणसहायवान्'—श्री विभीषण जी की सहायता प्राप्त करने वाले। 'रामाशाजीवनधृता'—श्री रामचन्द्र जी के दर्शन की आशा से जीवित रहने वाली। 'रामचिन्ताब्धिमग्निका'—श्री रामचन्द्र जी के लिये चिन्तामग्न। लक्ष्मणायोधहर्षास्यः—श्रीलक्ष्मण जी के युद्ध कौशल को देख हर्षित मुख वाले। 'मारुतात्मजवाहनः'—वायुपुत्र श्री हनुमान जी जिनके वाहन हैं!

मू०—हनुमद्ध्वजकरणी चिरंजीवनदायिनी ।
कुम्भकरणविनाशी च मेघनादे मृतु_ सुखी।। ८३।।
लंकामारिश्रुताहर्षा सरमादिप्रहासिनी ।
प्रहस्तप्राणहरणो निकुम्भशिरसोहरः।। ८४।।
निमिबंशकिशोरी च निमिबंशविभूषणा ।
अकम्पनशिरश्छेदी इन्द्रयानस्थयुद्धकृत्।। ८५।।
बृद्धाभिरादस्नाता वस्त्रभूषणभूषिता ।
रावणप्राणहर्ता च महाविजयप्रापकः।। ८६।।
विभीषणसमानीता रामाननविलोकिनी ।
सीतालक्ष्मणसहितः पुष्पकस्थः ससेनया।। ८७।।
अग्निगर्भधृता साध्वी कान्ताक्रोडनिवासिनी ।
संग्राम दर्शयन् यातः तारादिसहितो हसन्।। ८८।।

निमराजकिशोरी च रामवामांकसंस्थिता ।
नन्दिग्रामागमनकृत् भरतादीन् विलोकयन् ।। ८६ ।।

टीका—'हनुमद्वज्रकरणी'—श्री हनुमान जी के अंग को वरदान दे वज्र कर देने वाली। 'चिरंजीवनदायिनी'—चिरकाल तक जीने का बरदान देने वाली। 'कुम्भकरणविनाशी'—कुम्भकरण को नाश करने वाले। 'मेघनादे मृतु सुखी'—मेघनाद की मृत्यु पर सुखी होने वाले। 'लंकामारिश्रुताहर्षा'—लंका में मार काट मची हुई है, यह सुन कर प्रसन्न होने वाली। 'सरमादिप्रहासिनी'—विभीषण जी कीकन्या सरमादि के साथ प्रहास करने वाली। 'प्रहस्तप्राणहरणः'—प्रहस्त के प्राण को हरने वाले। 'निकुम्भशिरसोहरः'—निकुम्भ के शिर को काटने वाले। 'निमिबंशकिशोरी'—निमिवंश की किशोरी (कन्या) 'निमिबंशविभूषणा'—निमिवंश की भूषण स्वरूपा श्री किशोरी जी। 'अकम्पनशिरश्छेदी'—अकम्पन के शिर को छेदने वाले। 'इन्द्रयानस्थयुद्धकृत्'—इन्द्र के रथ पर सवार होकर युद्ध करने वाले। 'बृद्धाभिरादरस्नाता'—वृद्ध राक्षसियों द्वारा आदर पूर्वक स्नान कराई गई अर्थात् जब रण में विजय हो गई तब सरकार ने विभीषण जी को आज्ञा दी कि श्री जानकी जी को अलंकृत करके ले आओ। विभीषण जी ने, तब, श्री जानकी जी को वृद्ध राक्षसियों द्वारा स्नान कराकर श्री रामचन्द्र जी के सामने उपस्थित किया। 'रावणप्राणहर्त्ता'—रावण के प्राण को हरने वाले। 'महाविजयप्रापकः' लंका में महाविजय प्राप्त करने वाले। 'विभीषण समानीनता' अशोक वाटिका से विभीषण जी के द्वारा श्री रामचन्द्र जी के समक्ष लाईं गईं 'रामाननविलोकिनी'—श्री रामचन्द्र जी के मुखारविन्द का अवलोकन करने वाली। 'सीतालक्ष्मणसहित' श्री सीता जी तथा श्री लक्ष्मण

जी सहित श्री राम जी। 'पुष्कस्थः ससेनया'—सेना सहित पुष्पक विमान पर बैठे हुए श्री राम जी। 'अग्निगर्भधृता'—अग्नि के गर्भ में रखी गईं अर्थात् अग्नि में वास करने वाली। 'साध्वी' पतिव्रता 'कान्ताक्रोड़निवासिनी'—श्री रराम जी की गोद में वास करने वाली। संग्रामं दर्शयन यातः लंका से प्रस्थान करने पर श्री प्रया जू को संग्राम भूमि को दिखलाते हुए चलने वाले। 'तारादिसहितो हसन्' किष्किन्धा से तारादिक बानरियों को भी साथ में लेकर चलने वाले। 'निमिराजकिशोरी' श्री जनकदुलारी श्री किशोरी जी। 'रामावामांकसंस्थिता'—श्री राम जी की बांयी ओर बैठी हुई श्री सीता जी। 'नन्दिग्रामगमनकृत'—नन्दि ग्राम में जाने वाले 'भरतादीनविलोकयन्'—श्री भरत जी प्रभृति आने पारिवारिकों को देखते हुए।

मू०—अयोध्याप्रापितानन्दा गुरुपत्नीपदानता ।
गुरुपादनमस्कारी मातृणां पादवन्दितः ।। ९० ।।
राजशृंगाररचिता सर्वशोभाप्रसाधिता ।
तपस्वीवेषनिर्मुक्तः पितृराज्यप्रसाधकः ।। ९१ ।।
महाराज सनस्था च रामेणाभिविराजिता ।
अयोध्याराज्यपालश्च प्रजानन्दप्रदायकः ।। ९२ ।।
अयोव्येश्वरपत्नी च अयोध्यानन्दबर्धिनी ।
महाराजाधिराजश्च मारुतात्मजसेवितः ।। ९३ ।।
लक्ष्मणेश्वरपत्नी च लक्ष्मणाग्रजबल्लभा ।
कौशलेन्द्रपुरेशश्च कौशलेन्द्रपुरीपतिः ।। ९४ ।।

टीका—'अयोध्याप्रापितानन्दा'—श्री अयोध्या जी को आनन्द पहुंचानेवाली। 'गुरुपत्नीदानता'—गुरुपत्नियों के चरणों में नमस्कार करने वाली। 'गुरुपादनमस्कारी'—गुरुपत्नियों के चरणों में नमस्कार करने वाले। 'मातृणांपादवन्दितः'—माताओं के चरणों की वन्दना करने वाले। 'राजशृंगाररचिता'—राजकीय शृंगार से सुशोभिता। 'सर्वशोभाप्रसाधिता'—सभी भूषण, वस्त्र, अलंकारादि की शोभा से सुशोभिता। 'तपस्वीवेषनिर्मुक्तः'—तपस्वी वेष को त्याग कर (बल्कल तथा जटादि को त्याग कर) शिरस्नान करने वाले। 'पितृराज्यप्रसाधकः'—अपने पिता के राज्य को सम्भालने वाले। महाराजासनस्थाः महाराजा के आसन अर्थात् चक्रवर्ती सिंहासन पर बैठी हुई। 'रामेणाभिविराजिता'—श्री रामचन्द्र जी के सहित राज्य सिंहासन पर बैठने वाली श्री जानकी जी। अयोध्या 'राज्यपालः'—श्री अयोध्या के राज्य के पालन करने वाले। 'प्रजानन्दप्रदायकः' अपनी सभी प्रजाओं को आनन्द प्रदान करने वाले। 'अयोध्येश्वरपत्नी'—अयोध्याधिपति श्री राम जी की भार्या। अयोध्यानन्दवर्द्धिनी—अयोध्या वासियों के आनन्द को बढ़ाने वाली। महाराजाधिराजः—महाराजाओं के महाराजा। 'मारुतात्मजसेवितः'—श्री हनुमान जी से सेवित श्री राम जी। 'लक्ष्मणेश्वरपत्नी'—श्री लक्ष्मण जी के प्रभू श्री राम जी की पत्नी। 'लक्ष्मणाग्रजबल्लभा'—श्रीलक्ष्मण जी के बड़े भाई श्री रामचन्द्र जी की प्राणेश्वरी श्री किशोरी जी। 'कौशलेन्द्रपुरेषः'—कौशलेन्द्र श्री दशरथ जी के पुत्र श्री अवध के स्वामी। 'कौशलेशपुरीपतिः'—अयोध्याधिपति श्री राम जी।

मू०—भरत्ताग्रजवामस्था सभाशोभाप्रवर्धिनी ।
इक्ष्वाकुराज्यशास्ता च पृथ्वीधर्मपालकः ।। ९५ ।।

सुग्रीव पत्नीभजिता विभीषणप्रियार्चिता ।
रविराजकुलोद्भूतः कुलवृद्धानुपालकः ।। ९६ ।।
द्विजपत्नीनमस्कीर्त्री गुरुभार्याकृतार्चना ।
लक्ष्मणप्रेमपात्रश्च लक्ष्मीकान्तः प्रियंकरः ।। ९७ ।।
वसुन्धरात्मजा चैव वसुधा वसुधा सुता ।
रघुराजकुलेशश्च रघुबीरो रघूत्तमः ।। ९८ ।।
व सवीकन्यका श्यामा रघुराजकुलेश्वरी ।
रघुबंशी विशालाक्षो ह्ययोध्यापुण्यक्षेत्रकृत् ।। ९९ ।।
वसुमतीगर्भसम्भूता जगतीधरपूजिता ।
रविवंशकिशोरश्च रविपुत्रकुलोद्भवः ।। १०० ।।

टीका—'भरताग्रजावामस्था'—भरत जी के बड़े भाई श्री रामचन्द्र जी की बायीं तरफ बैठने वाली। 'सभाशोभाप्रवर्द्धिनी'—सभा की शोभा को बढ़ाने वाली। 'इक्ष्वाकुराज्यशास्ता'—इक्ष्वाकु राज्य का पालन करने वाले। 'पृथ्वीधर्मपालकः'—पृथ्वी के धर्म की रक्षा करने वाले। 'सुग्रीवपत्नीभजिता'—श्री सुग्रीव जी की पत्नी से सेविता। 'विभीषणप्रियार्चिता'—श्री विभीषण जी की प्रिया श्री सरमा जी से पूजिता। 'रविराजकुलोद्भूतः'—सूर्यवंशीय राजकुल में प्रकट होने वाले। 'कुलवृद्धानुपालकः' अपने कुल के वृद्धजनों का पालन करने वाले। 'द्विजपत्नी नमस्कर्त्री' ब्राह्मण पत्नियों को नमस्कार करने वाली। 'गुरुभार्याकृतर्चना' गुरुपत्नियों की पूजा करने वाली श्री किशोरी जी। 'लक्ष्मणप्रेमपात्रः' श्री लक्ष्मण जी के प्रेम के पात्र। 'लक्ष्मीकान्तः'—(श्री लक्ष्मीस्वरुपा श्री सीता लक्ष्मी, भगवान विष्णुः) इस कथनानुसार श्री

लक्ष्मीस्वरूपा श्री सीता जी के पति। 'प्रियंकर'—प्रिय करने वाले, अथवा 'लक्ष्मीकान्तः प्रियंकरः'—श्रीलक्ष्मी जी के कान्त श्रीविष्णु भगवान का प्रिय करने वाले। 'वसुन्धरात्मजा'—पृथ्वी की कन्या। 'वसुद'—धन ऐश्वर्य देने वाली। 'वसुधासुता'—पृथ्वी की पुत्री। 'रघुराजकुलेशः'—रघुराज कुल के प्रभु। 'रघुवीरः'—रघुकुल के वीर। 'रघूत्तमः'—रघुकुल में उत्तम। 'वासवी कन्यका'—वासनी की कन्या। 'श्यामा'—नित्ययौवनावस्था वाली। 'रघुराज कुलेश्वरी'—रघुराजकुल की स्वामिनी। 'रघुवंशसी'—रघुवंश में अवतीर्ण। 'विशालाक्षः'—विशालनेत्रवाले। 'अयोध्यापुण्यक्षेत्रकृत्'—श्री अयोध्या जी को पुण्यक्षेत्र करने वाले। वसुमतीगर्भसम्भूता—पृथ्वी के गर्भ से पैदा होने वाली। 'जगतीधरपूजिता'—त्रैलोक्य को धारण करने वाले श्री राम जी से संमादरणीया। 'रविवंशकिशोरः'—सूर्य्यवंश के किशोर। 'रविपुत्रकुलौद्भवः'—सूर्यकुल के पुत्र श्री वैवस्वत् मनु के कुल में प्रकट होने वाले श्री राम जी।

मू०—क्षोणीसुताभुवनजा भूकन्या भुविनिर्गता ।
कौशल्येयश्च काकुत्स्थः कल्याणः कमलेक्षणः ।। १०१ ।।
ऊर्वीकन्या सुकेशी च मंजुघोषादिवेष्टिता ।
प्रमोदारण्यरासेप्सू रम्भानृत्य परायणः ।। १०२ ।।
प्रमोदारण्यरक्षिका प्रमोदारण्यपाविता ।
प्रमोदारण्यनटनः प्रमोदारण्य केलिकृत् ।। १०३ ।।
प्रमोदारण्यनटिनीः प्रमोदारण्यकेलिनी ।
प्रमोदारण्यनटिनीः प्रमोदारण्यकेलिकृत् ।। १०४ ।।

प्रमोदवनपुष्पाढ्या प्रमोदवन गायनी ।
प्रमोदवनहर्षास्य: प्रमोदारण्य रासकृत् ।। १०५ ।।

टीका—क्षोणीसुता—पृथ्वी की कन्या। 'भुवनजा'—पृथ्वी से उत्पन्न। 'भूकन्या'—पृथ्वीपुत्री। 'भुर्विनिर्गता'—पृथ्वी में से निकली हुई। 'कौशल्येय: श्री कौशल्या जी के पुत्र। 'काकुत्स्थ:' काकुत्स्थ महाराज के वंश में अवतीर्ण। 'कल्याण:'—जगत का कल्याण करने वाले श्री रामचन्द्र जी। (जगत: कल्याणमस्ति यस्मिन्निति कल्याण:, अर्श आद्यच् प्रत्यय:, इस व्युत्पत्ति से सिद्ध होता है।) कमलेक्षण:—कमल के समान नेत्र वाले। 'उर्विकन्या'—पृथ्वी सुता। 'सुकेशी'—सुन्दर बालों वाली। 'मंजुघोषादिवेष्टिता'—मनोहर नृत्य तथा वाद्यादि के मधुर शब्दों से निरन्तर घिरी रहने वाली। 'प्रमोदारण्यरासेप्सु:'—प्रमोद वन में रास की चाहना करने वाले। 'रम्भानृत्यपरायण:'—रंभा नृत्य में निपुण। 'प्रमोदारण्यरसिका'—प्रमोदवन को चाहने वाली। 'प्रमोदारण्यपाविता'—प्रमोद वन को पवित्र करने वाली। 'प्रमोदारण्यनटन:'—प्रमोदवन में घूमने वाले। 'प्रमोदारण्यकेलिकृत्'—प्रमोदवन में बिहार करने वाले। 'प्रमोदारण्यनटिनी'—प्रमोद वन में घूमनेवाली। 'प्रमोदारण्यकेलिनी'—प्रमोदवन में बिहार करने वाली। 'प्रमोदारण्यप्रीतात्मा'—प्रमोदवन में प्रसन्न रहने वाले। 'प्रमोदारण्यकेलिकृत्'—प्रमोदवन में नृत्यादि विहार करने वाले। 'प्रमोदबनपुष्पाढ्या'—प्रमोदवन में पुष्पाभूषणों से अलंकृत। 'प्रमोदबनगायनी'—प्रमोदवन में गान करने वाली। 'प्रमोदवनहर्षास्य:'—प्रमोद वन में प्रसन्नमुख होने (रहने) वाले। 'प्रमोदारण्यरासकृत'—प्रमोद वन में रासक्रीड़ा करने वाले।

मू०—अयोध्यापालिका वन्द्या अयोध्यानृपप्रीतदा ।
किशोरः कमनीयश्चकंजाक्षः कामनाप्रदः ।। १०६ ।।
हंशवंशेश्वरी हंसहासिनी हंसगामिनी ।
हसवशेश्वरो हंसो हंसराजसुतप्रियः ।। १०७ ।।
पद्मिनी पद्मनयना पद्मगन्धलसम्मुखी ।
चन्द्रस्मितश्चकोराक्षश्चंचलश्चन्द्र वन्मुखः ।। १०८ ।।
चन्द्रिका चन्द्रवदना चन्द्रहारिबिभूषिता ।
चद्रमोलालितश्चन्द्रो हरचन्दनचर्चितः ।। १०९ ।।
चन्दनालिप्तबाँगी चन्दनामोदमोदिनी ।
चन्दनागरुगन्धाढ्यश्च द्रसचन्दनप्रियः ।। ११० ।।

टीका—'अयोध्यापालिका' श्री अयोध्या जी का-पालन करने वाली। 'वन्द्या'—सम्पूर्ण जगत के चराचर में वन्दनीया। 'अयोध्यानृपप्रीतिदा'—श्री अयोध्यापति रामचन्द्र जी को प्रीति (प्रसन्नता) प्रदान करने वाली। 'किशोरः'—नित्य किशोर (सोलह वर्ष) की अवस्था वाले। 'कमनीयः'—मनोहर स्वरूप वाले। 'कंजाक्षः'—कमल नयन। 'कामनापदः'—मनोकांक्षित कामना को देने वाले। 'हंसवंशेश्वरी'—सूर्य वंश की स्वामिनी। 'हंसहासिनी'—हंस के समान हंसने वाली। 'हंसगामिनी'—हंस के समान धीरे-धीरे चलने वाली। 'हंसबंशेश्वरः' सूर्य वंश के स्वामी। 'हंसः' सूर्य के समान प्रकाश वाले। 'हंसराजसुतप्रियः'—श्री दशरथ जी महाराज के प्रिय। 'पद्मिनी'—पद्मिनी नायिका के लक्षण वाली। कमल के समान रुचिर शरीर होने की वजह से पद्मिनी यह नाम श्री

किशोरी जी का है। 'पद्मनयना'—कमल नेत्र वाली 'पद्मगन्धलसन्मुखी'—कमलगन्ध से सुशोभित मुख वाली। या कमल से उत्पन्न किसी गन्ध का व्यवहार मुख पर करने से पूर्वोक्त नाम है 'चन्द्रस्मितः'—चन्द्रमा के समान प्रिय तथा मनोहर मुस्कान वाले। 'चकोराक्षः'—चकोर नेत्र अर्थात् चकोर के सामन श्री किशोरी जी के चन्द्रमुख को निरखने वाले 'चंचलः'—ऐकान्तिक विहार में अत्यन्त चंचल स्वभाव वाले। 'चन्द्रवन्मुखः'—चन्द्रमा के समान मुखारविन्द वाले। 'चन्द्रिका चाँदनी' अर्थात् श्री रामचन्द्र जी चन्द्रमा हैं तथा श्री किशोरी जी चन्द्रिका (प्रभा—चांदनी हैं)। (अनन्या राघवेणाहं भास्करिणप्रभायथा।) 'चन्द्रवदना'—चन्द्रमा के सदृश मुखारविन्द वाली। 'चन्द्रहारविभूषिता'—चन्द्रहार से विभूषित श्री किशोरी जी। 'चन्द्रमोलालितः'—चन्द्रमा से लालित श्रीराम जी। (चन्द्रमा में जो जगत् को शीतलता प्रदान तथा आनन्द प्रदान की शक्ति है वह श्री रामचन्द्र जी से ही प्राप्त है। अतः चन्द्रमा श्री रामचन्द्र की सदा सेवा करते हैं जिससे उनका जगदाह्लादी गुण सदैव वर्तमान रहे।) चन्द्रः—सर्व सत्व मनोहर और आनन्द वर्धक होने से श्री रामजी चन्द्र हैं। हरिचन्दनचर्चितः—हरि चन्दन से श्री रामचन्द्र जी चर्चित (अनुलेपित) हैं चन्दनालिप्तसर्वांगी—श्री किशोरी जी के सम्पूर्ण शरीर में चन्दन के लेप होने से यह नाम है। चन्दनामोदमोदिनी—चनछ्न के गन्ध से सुगन्धिता। चन्दनागुरुगन्धाढ्यः—चन्दन और अगरू के सुगन्ध से सुगन्धित। चन्द्रमा—आनन्दवर्धक श्री राम जी। चन्द्रनप्रियः—जिन्हें चन्दन अत्यधिक प्रिय है अर्थात् श्री रामचन्द्र जी।

❁ अथ स्तुतिः ❁

मू०—कल्याणंनोविधत्तांत्रिभुवनजननीजन की भूमिजाता
चिच्छक्तिर्वासुदेवे विधिहरिनकरेपंचतत्वेन चन्द्रा
विभ्रंतीपाणियुग्मेसरसिजकलिकामालिकांरामकण्ठे
गच्छतीराजरंगेसखिगणसहितादातुमम्भोरुहाक्षी

टीका—श्री वासुदेव भगवान के विषय में चित् (चैतन्य) शक्ति तथा ब्रह्मा जी शंकर जी आदि को समुदाय में पंचतत्व रूप से चन्द्रमा कमलनयिनी श्री रामजी के गले में पहनाने के लिये दोनों हाथों में कमल की कलियों की माला को लिये हुये राजाओं की रंगभूमि में सखी गणों के सहित घूमती हुई तीनों लोकों की माता श्री भुमितनया श्री जानकी जी हम सबों का कल्याण करें।

मू०—स्वर्णाम्भोजाभवर्णासरसिजनयनापूर्णचन्दस्मितास्या
पश्यन्तीरामरूपंपरकररचितंचापखण्डंतमेकम्।।
जल्पंतीचारुशब्दंजयजयममलं, देबताब्राह्मणानां,
विप्राणांसाधिताद्याऋषिजनकसुतापातुमांसर्बदासा

टीका—स्वर्ण के कमल के समान कान्तिवाली कमल के समान नेत्र वाली पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान मन्द-मन्द मुस्कान युक्त मुख वाली परिकरों से रचित श्री राम जी के मनोहर रूप तथा खण्डित पीनाक को देखती हुई मनोहर तथा प्रिय शब्दों को कहती हुई देवता ब्राह्मणों के निर्मल जय २ जय शब्द को सुनती हुई ब्राह्मणों द्वारा साधिता आद्या शक्ति राजर्षि श्री जनक जी की कन्या श्री जानकी जी सदा हमारी रक्षा करें।

मू०—यः कोदण्डमतोलयदगिरिसुतापाथोपादार्चको,
दर्भाभिः पतितश्चयोरघुपतिः पाणौस्थितोभूषितः
यो वैकौतुक मन्दिरे युवतिभिः प्रादाद्धविस्तन्मुखे
सः सतीकरलालितोऽवतु सदायोवाहुमूलेस्थितः ।।

टीका—जिन्होंने शंकर जी के धनुष को उठा कर तोड़ दिया, श्री पार्वती जी के चरण कमलों की पूजा कर साष्टांग प्रणाम किया तथा जिनके करकमल वैज्ञानिक कंकणादि आभूषणों से विभूषित हैं जिन्हें कोहबर में स्त्रियों ने अपने हाथों से भोजन कराया तथा श्री किशोरी जी के करकमलों से और उनके बाहुमूल में स्थित श्री रामचन्द्र जी हमारी सर्वदा रक्षा करें।

मू०—यः सिद्धैर्मुनि निपुंगवैः सुरगणैः संसेवितः पूजितः,
ब्रह्माखण्डलशंकरादिभिरलं श्रीखण्डसंचर्चितः ।।
भक्तानां भववन्धतापहरणे तीर्थास्पदः शोभननः,
सीतार्चितपदपंकजो दिशतुमेश्रेयांसि दिव्यानः,

टीका—जो सिद्ध पुरुषों के देव गणों से सेवित और पूजित हैं तथा ब्रह्मा इन्द्र शंकर आदि देवताओं के द्वारा भली भांति श्रीखण्ड चन्दन से अनुलेपित हैं भक्तों के संसार बन्धन को दूर करने के लिये सुन्दर तीर्थ स्थान हैं और श्री सीता जी जिनके चरण कमलों की सेवा करती हैं वे दिव्य मुख वाले श्री रामचन्द्र जी हम सबों का कल्याण करें।

मू०—अस्माकं जनकात्मजायुवतिभिर्नम्रीकृतावेष्टिता
विप्रःणां गुरुरंगानाशिष सशृंण्वन्तीसस्मिता

श्रीमन्मैथिलराजकौतुकगृहे ग्रन्थीकृताऽऽवेष्टिता
साभव्यंनितरांतनोतु सततंरामस्यवामान्विता ।५।

टीका—परम सुशीलता से युक्त नायिकाओं के द्वारा विनीता और उन्हीं नायिकाओं से घिरी हुई, ब्राह्मणों तथा गुरुपत्नियों के सुन्दर, निर्मल आशीर्वाद को मन्द मन्द मुस्कान के साथ सुनती हुई, तथा श्रीमान मिथिलेश जी महाराज के कौतुकागार (कोहबर गृह) में श्री रामचन्द्र जी के साथ ग्रन्थ वन्धन को प्राप्त, सखियों से घिरी, श्री राम जी के वाम भाग में सतत बिराजमान श्री मिथिलेशराजतनया श्री जानकी जी हम लोगों का अत्यन्त कल्याण करें।

❁ अथमहात्म्यम् ❁

मू०—इदं ते कथितं वत्स श्रीसीतारामयोः शुभम् ।
सहस्रनामयुगलं भावुकानां मनोज्ञदम् ।। १ ।।
तस्माद्यलेन मो वत्स वैष्णवानां महद्धनम् ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीय प्रयत्नतः ।। २ ।।
देयं सदोपासकाय रसिकायात्मभक्तये ।
इदं सर्वस्वपरमं न देयं चान्यमार्गिणे ।। ३ ।।

टीका—हे वत्स ! श्री सात राम जी के इस भावुक महात्माओं के मनोज्ञ वस्तु को देने वाले युगलसहस्रनाम को मैंने तुम्हारे लिये कहा है। हे

वत्स ! यह वैष्णवों का महान् धर्म है यह परम गोपनीय है, इसे यत्न से छिपाना चाहिये। इस युगलसहस्रनाम को सदा उपासना के करने वाले रसिक, श्री भगवद्भक्त को देना चाहिये। यह परम सर्वस्व है, अन्यमार्गावलम्बी को नहीं देना चाहिये।

मू०—सीतारामसहस्रनाम युगलं यद्वैशणवानांधन ।
ये शृण्वन्ति पठन्ति पूजनपरा रामैकतानात्मकाः
ते भक्ताः कवयोधनाढ्यसुखिनः सत्पूज्यमानावरा
वाजी वारणसैनिकाधिपयोविस्तीर्णकीर्त्यायुताः ।। ४ ।।

टीका—जो श्री सीतारामसहस्रनाम युगल वैष्णवों का धन है, उसको जो कोई सुनेंगे या श्री राम जी के पूजन करते हुए पढ़ेंगे वे भक्त हो जायेंगे तथा श्री राम जी का एकतार से ध्यान करने वाले हो जायेंगे तथा कवि, धनाढ्य, सुखी सज्जनों से पूजित, श्रेष्ठ हो जायेंगे और घोड़ा, हाथी सेना के अधिपति होंगे। तथा विस्तीर्ण कीर्ति से युक्त हो जायेंगे।

मू०—सीतारामसहस्रनाम युगलंश्रोताऽथवा पाठकः ।
श्रद्धाभक्तियुतेन शुद्धमनसा, देवादिभिर्वन्दितः
तस्यैवंभवतिध्रवहृंदिहरिः संसक्तियुक्तः स्थितः,
कृत्वापापनिवारणंकुलपतिर्बैंकुण्ठदायं भजेत् ।। ५ ।।

टीका—जो श्रद्धा भक्ति युक्त शुद्ध मन से श्रीसीताराम सहस्रनाम युगल को सुनता अथवा पढ़ता है उसके ही हृदय में समस्त देवादिकों से वन्दित हरि भगवान् श्री राम जी आसक्ति युक्त होकर स्थित हो जाते हैं और उसके

पापों का निवारण कर देते हैं और वह कुलपति होता है अतः उस बैकुण्ठदाता को भजना चाहिये।

मू०—गंगास्नानतडागकूपखननात्कन्याप्रदानात्ततः
तीर्थानामटनात्प्रयागकणाद् गोऽश्वादिद नादिह।
यत्पुण्यंलभते हयाध्वर कृतेचान्द्रायणादिब्रतात्,
सीतारामसहस्रनामपठात्तत्सर्वदा प्राप्यते।।६।।

टीका—गंगा जी में स्नान करने से, तालाब, कुआं, खुदवाने से, कन्यादान करने से, तीर्थों में घूमने से प्रयाग जाने से, गौ, घोड़ा आदि दान करने से, अश्वमेध यज्ञ करने से, चान्द्रायणादि ब्रत करने से इस संसार में जो पुण्य होता है, वह पुण्य श्री सीताराम युगलसहस्रनाम के पाठ से सर्वदा प्राप्त कर लेते हैं।

इति श्रीभुशुण्डिरामायणान्तर्गत श्रीब्रह्मानारद सम्बादे बालकाण्डे
द्वयाशीतितमेऽध्याये श्रीसीताराम युगलसहस्रनाम्नः
निखिलशास्त्र निष्णात पण्डित प्रवर श्री रामवल्लभाशरण
चरणाश्रित पं० अखिलेश्वरदास कृता
भाषा टीका समाप्ता।